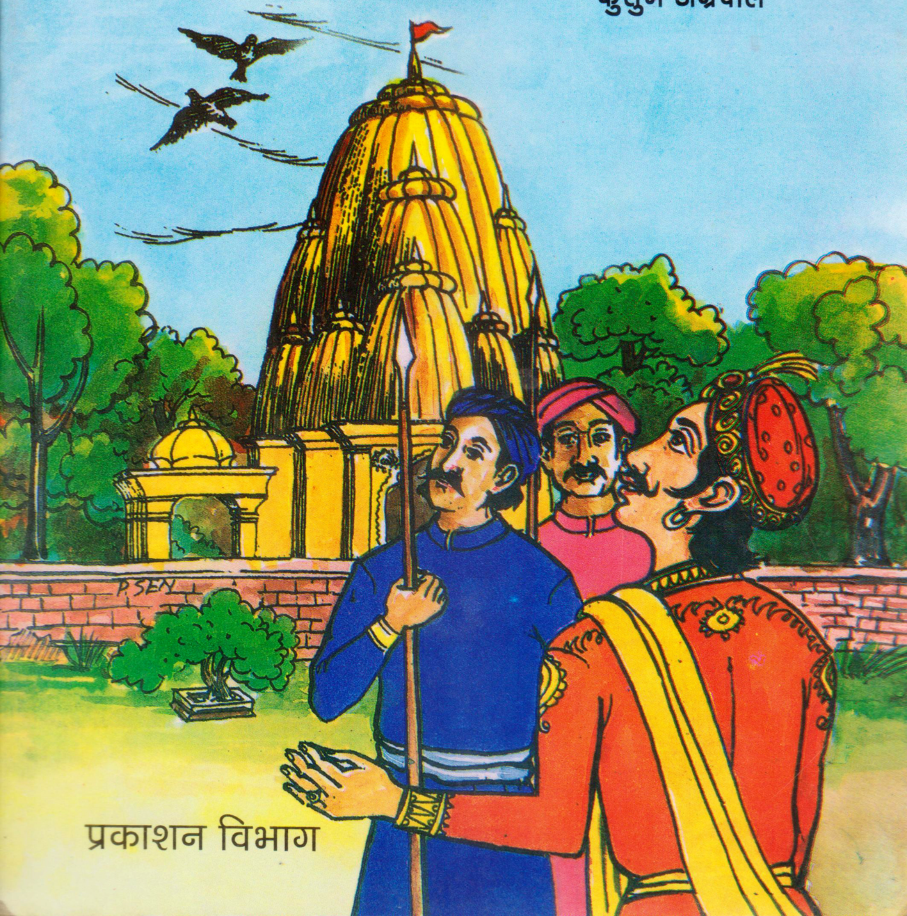
कबूतर उड़ गए

कुसुम अग्रवाल



प्रकाशन विभाग

बालकथा-संग्रह

कबूतर उड़ गए

कुसुम अग्रवाल

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण शक 1924 (2002)
पुनर्मुद्रण – शक 1926 (2004)

ISBN : 81-230-1027-3
मूल्य : 40 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001, द्वारा प्रकाशित

वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

विक्रय केंद्र* • *प्रकाशन विभाग • पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली–110001 (फोन : 2338 6096) • सूचना भवन, सीजीओ काम्प्लेक्स, नई दिल्ली–110003 (फोन : 2436 5610) • हाल नं. 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054 (फोन : 2389 0205) • कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई–400038 (फोन : 2261 0081) • 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कोलकाता–700069 (फोन : 2248 8030) • राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई–600090 (फोन : 2491 7673) • बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना–800004 (फोन : 2301 823) • प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम–695001 (फोन : 2330 650) • हाल नं. 1, दूसरी मंजिल, केंद्रीय भवन, अलीगंज, लखनऊ–226024 (फोन : 2325 455) • प्रथम तल, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला, बंगलौर–560034 (फोन : 25537244) • अंबिका काम्प्लेक्स, प्रथम तल, पालदी, अहमदाबाद–380007 (फोन : 2658 8669) • नौजान रोड, उजान बाजार, गुवाहाटी–781001 (फोन : 2516 792) • ब्लाक नं. 4, गृहकल्प काम्प्लेक्स, एम.जे. रोड, नामपल्ली, हैदराबाद–500001 (फोन : 2460 5383) • पीआईबी, 80 मालवीय नगर, भोपाल–462003 (फोन : 2556 350) • पीआईबी, सीजीओ काम्प्लेक्स, 'ए' विंग, ए.बी. रोड, इंदौर, मध्य प्रदेश (फोन : 2494 193) • पीआईबी, बी–7/बी, भवानी सिंह मार्ग, जयपुर–302001 (फोन : 2384 483)।

मुद्रक : अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड, डब्ल्यू–30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज–II, नई दिल्ली–110 020

विषय सूची

सच्ची भक्ति

एक था राजा। उसके राज्य में एक बहुत ही अच्छे चिकित्सक थे- देवदत्त। उनके हाथों में न जाने क्या जादू था कि कोई भी रोगी उसके पास से निराश होकर नहीं जाता था। राजा भी देवदत्त का बहुत सम्मान करता था।

एक दिन देवदत्त ने सोचा- "बहुत दिन हो गए संसार की मोह-माया में रहते हुए। अब मुझे मोहमाया को त्याग भगवान का भजन करना चाहिए। जिससे मेरा परलोक सुधरे।" यह सोचकर उन्होंने संन्यास लेने का फैसला किया।

जब राजा को यह समाचार मिला तो वह बहुत चिंतित हुआ। वह देवदत्त के पास गया और बोला- "मैंने सुना है आपने संन्यास लेने का फैसला किया है। क्या यह उचित है? आपके वन में चले जाने के बाद लोगों का क्या होगा? इसीलिए मेरी विनती है कि आप यहीं रहिए।"

लेकिन देवदत्त ने तो पक्का निश्चय कर लिया था। वह बोले- "राजन, तुम्हारे राज्य के कामों के लिए मैं अपना परलोक नहीं बिगाड़ सकता। यदि ईश्वर की भक्ति नहीं करूंगा तो मेरी गति कैसे होगी? इसलिए मैं संन्यास तो लूंगा ही। तुम कोई अन्य प्रबंध कर लो।" देवदत्त का यह उत्तर सुनकर राजा निराश होकर अपने महल में लौट आया।

कुछ दिनों बाद उसे समाचार मिला कि देवदत्त वन में चले गए हैं।

देवदत्त तो वन में चले गए परंतु राजा के लिए एक गंभीर समस्या खड़ी कर गए। वह जानते थे कि राज्य में अन्य कोई ऐसा चिकित्सक नहीं है जोकि समस्त प्रजा के हर रोग का इलाज कर सके, इसलिए वो रात-दिन इसी सोच में डूबे रहते कि किस तरह इस समस्या का निदान हो। अन्य कोई हल न देखकर उन्होंने भगवान शिव की आराधना करनी शुरू कर दी।

उधर वन में देवदत्त तपस्वियों का-सा जीवन जीने लगे तथा भगवान की आराधना करते रहते। एक दिन वह भगवान का भजन कर रहे थे कि अचानक भगवान शिव उनके सामने प्रकट हुए। 'भगवान ने मुझे दर्शन दिए, मेरी तपस्या सफल हुई' -यह सोचकर देवदत्त भगवान शिव के चरण-स्पर्श करने के लिए उद्यत हुए। परंतु वह ज्यों ही भगवान के करीब पहुंचे तो देखा उनके स्थान पर एक रोगी मनुष्य पड़ा कराह रहा है। वे अचंभित हो गए।


P.SEN

उन्होंने फिर दूसरे स्थान पर भगवान शिव को देखा। परंतु जैसे ही वह भगवान तक पहुंचे, तब तक भगवान शिव का स्थान फिर रोगी मनुष्य ने ले लिया था। जब कई बार ऐसा हुआ तो देवदत्त अधीर हो उठे। अधीर होकर उन्होंने भगवान शिव को मदद के लिए पुकारा।

देवदत्त की पुकार सुनकर भगवान शिव अपने सौम्य रूप में प्रकट हुए तथा बोले– ''क्या बात है देवदत्त, तुमने क्या देखा जो इतने अधीर हो गए हो?''

यह सुनकर देवदत्त बोला– ''भगवन, मैं देखता हूं कि आप हैं, फिर देखता हूं आप नहीं रोगी मनुष्य है। यह क्या माया है प्रभु?''

यह सुनकर भगवान शिव हंसे और बोले– ''इसमें आश्चर्य की क्या बात है। यह तो सत्य है कि मैं ही रोगी मनुष्य हूं। मेरा वास तो सभी मनुष्यों में है। फिर तुम मेरे लिए वन-वन क्यों भटकते हो। यदि मेरी सच्ची भक्ति करना चाहते हो तो अपने राज्य में वापस लौट जाओ और रोगी तथा दुखी मनुष्यों की सेवा करो। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूंगा।'' यह कहकर भगवान शिव अंर्तध्यान हो गए।

भगवान शिव का उपदेश सुनकर देवदत्त को अपनी भूल समझ में आ गई। वह वापिस अपने राज्य में लौट आए और फिर से बीमार व दुखी मनुष्यों की सेवा में जुट गए।

बाग में चोर

एक थी रूपा। उसे पेड़-पौधे लगाने का बहुत शौक था। उसने अपने घर के पास एक छोटा सा बगीचा लगा रखा था, जिसमें रंग-बिरंगे फूलों के पौधे लगे हुए थे। फलों के पेड़ भी थे। बगीचे के फूल-फल बेचकर वह अपना गुजारा करती थी। रूपा को अपने बगीचे से बड़ा लगाव था। वह सारा दिन उसी की देखभाल में जुटी रहती थी।

एक दिन रूपा बगीचे में पेड़-पौधों को पानी देने गई, तो हैरान रह गई। सभी पेड़-पौधों के फूल गायब थे।

अचानक उसकी नजर एक पेड़ के नीचे पड़े एक जोड़ी जूतों पर गई। वैसे जूते उसने कभी नहीं देखे थे। "शायद यह उसी के जूते हैं, जिसने मेरे बाग में चोरी की है।" -यही सोचकर उसने जूते उठाकर घर में रख लिए।

उसी दिन आधी रात के समय रूपा को कमरे में कुछ आहट सुनाई दी। उसकी नींद उचट गई। उसे कोई छाया कमरे में दिखाई दी। रूपा झट बिस्तर से उठी, उसने रोशनी जला दी।

रूपा ने देखा कि एक छोटी-सी परी उसके कमरे में खड़ी थी। वह परेशान दिख रही थी। रूपा ने उससे पूछा- "क्या बात है? तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

इस पर नन्ही परी बोली- "कल रात मेरे जूते यहीं रह गए थे। मैं वही ढूंढ रही हूं। उसके बिना मैं नाच नहीं सकती।"

रूपा को जैसे ही यह बात मालूम हुई कि जूते परी के हैं, वह आग-बबूला हो उठी। गुस्से से बोली- "तुम्हारे जूते मेरे पास हैं। शायद तुम्हीं कल मेरे बाग से फल-फूल चुराने आई थीं।"

इस पर नन्ही परी बोली- "नहीं, नहीं मैं चोर नहीं हूं। मैं तो कल रात यहां अपनी सखियों के साथ नृत्य करने आई थी। अचानक जोर से आंधी चलने लगी और वृक्षों से फल और पौधों से फूल टूट-टूटकर नीचे गिरने लगे। इससे हम घबराकर जल्दी से परीलोक की ओर लौट गईं। उसी हड़बड़ी में मेरे जूते यहां रह गए थे।"


P. SEN

रूपा को परी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। वह बोली- ''तुम झूठ बोलती हो। तुमने ही मेरे बाग में चोरी की है। अब मैं तुम्हें यहां से नहीं जाने दूंगी।'' यह कहकर रूपा ने परी को कोठरी में बंद कर दिया। परंतु यह क्या! जैसे ही रूपा ने दरवाजा बंद किया, वह खुल गया क्योंकि परी जादू जानती थी। उसने अपनी जादू की छड़ी घुमाकर दरवाजा खोल लिया था। वह नाराज होकर रूपा से बोली- ''तुमने बिना सोचे-समझे मुझे कैद करने का प्रयास करके अच्छा नहीं किया। मैं तो तुम्हारी मदद करना चाहती थी, पर अब नहीं करूंगी।'' यह कहकर नन्ही परी वहां से चली गई।

कुछ दिन बाद रूपा के बाग में फिर से नए फूल-फल लगे। रूपा उनकी देखभाल में जुट गई। साथ ही उसे यह चिंता खाए जा रही थी कि कहीं फिर उसके बाग में कोई चोर न आ जाए। वह दिन-रात बाग की रखवाली करती।

एक रात की बात है, रूपा बाग में पेड़ के नीचे बैठी थी। अचानक पेड़ों के पत्ते जोर-जोर से हिलने लगे, जोरों से आंधी चलने लगी। फूल-फल टूट-टूटकर गिरने लगे। जब सारे फूल-फल गिर गए, तो एक राक्षस आ पहुंचा। उसके पास एक बड़ा थैला था। वह थैले में फूल-फल भरने लगा।

यह देख, रूपा को आश्चर्य हुआ। साथ ही उसे स्वयं पर गुस्सा भी आया कि उसने परी पर शक करके उसे यूं ही नाराज कर दिया। अब उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं था। राक्षस फिर से सारे फल-फूल ले जाएगा, यह सोचकर वह जोर-जोर से रोने लगी।

रोते-रोते उसने ज्यों ही सिर उठाया, तो चकित रह गई। सामने वही नन्ही परी खड़ी मुस्करा रही थी। परी को देखकर रूपा बड़ी खुश हुई।

परी बोली- ''तुम इतनी उदास क्यों हो? मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए आई हूं।'' यह कहकर परी ने अपनी जादू की छड़ी घुमाई। छड़ी घुमाते ही जोरों से हवा चलने लगी। यह हवा उस दिशा से विपरीत बह रही थी, जिधर राक्षस जाना चाहता था। राक्षस अपना थैला पूर्व दिशा की ओर खींचता, तो वह पश्चिम की ओर खिंचने लगता।

राक्षस ने लाख कोशिश की, पर न वह थैले को खींच पाया, न स्वयं एक कदम आगे बढ़ पाया। आखिरकार राक्षस बहुत परेशान हो गया। राक्षस को परेशान देख परी उसके पास जा पहुंची।

परी को देखकर राक्षस गिड़गिड़ाकर बोला- ''कृपया अपना जादू हटाकर मुझे जाने दीजिए।''

तब परी बोली- ''मैं एक ही शर्त पर तुम्हें छोड़ सकती हूं। वायदा करो कि फिर कभी तुम इस बाग में चोरी करने नहीं आओगे।''

राक्षस हाथ जोड़कर बोला-- ''मैं वायदा करता हूं कि फिर कभी इस बाग में नहीं आऊंगा। खुद मेहनत करके अपना बाग लगाऊंगा।''

परी ने अपना जादू हटा लिया और राक्षस थैला छोड़कर चला गया। रूपा बहुत खुश हुई। उसने परी को धन्यवाद देना चाहा, पर परी न जाने कब चली गई थी।

''सचमुच परी कितनी अच्छी थी।'' -रूपा के होंठों से निकला। वह सोच रही थी-''काश, परी फिर आ जाए तो कितना अच्छा हो!''

सिपाही माटी के

एक थी खिलौने वाली। उसकी एक बेटी थी- दीपा। खिलौने वाली मिट्टी के सुंदर-सुंदर खिलौने बनाती और उन्हें बाजार में बेच आती। इसी से मां-बेटी का गुजारा चलता था। एक बार खिलौने वाली बीमार पड़ी। कुछ दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। अब दीपा अकेली रह गई थी। ये तो अच्छा हुआ कि उसने अपनी मां से खिलौने बनाने सीख लिए थे। अब वह स्वयं खिलौने बनाती और बेच आती। इसी तरह उसका जीवन चलने लगा।

एक दिन दीपा ने मिट्टी की एक गुड़िया बनाई। गुड़िया थी अत्यंत सुंदर। ऐसा लगता था, मानो अभी बोल उठेगी। दीपा ने सोचा--'मैं इसे बेचूंगी नहीं, अपने ही पास रखूंगी।' लेकिन बेचारी ऐसा कैसे कर सकती थी- तब तो उसे भूखा ही रहना पड़ता। अगले दिन बड़े अनमने मन से उसे बेचने के लिए ले गई। शाम ढलने तक उसके सभी खिलौने बिक गए, किंतु वह गुड़िया न बिकी क्योंकि दीपा ने उसके दाम बहुत ज्यादा बताए थे।

अंधेरा घिरने लगा था। दीपा के अन्य साथी अपने-अपने घर लौट गए थे। दीपा ने सोचा- 'अब मुझे भी चलना चाहिए।' यह सोचकर वह चलने को उठी। तभी वहां एक बूढ़ा आया। उसने लंबा चोगा पहन रखा था। उसकी लंबी दाढ़ी जैसे जमीन को छू रही थी। चेहरा डरावना-सा था। दीपा बूढ़े व्यक्ति को देखकर कुछ डर गई।

बूढ़े ने दीपा से पूछा- "क्या तुम्हीं खिलौने बनाने वाली लड़की हो?"

दीपा ने डरते-डरते उत्तर दिया--"हां, मैं ही खिलौने बनाती हूं।"

बूढ़ा फिर बोला--"तुम एक दिन में कितना कमा लेती हो?"

दीपा बोली--"अधिक नहीं, बस दो जून की रोटी मुश्किल से जुटा पाती हूं।"

बूढ़े ने कहा--"मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें अच्छी तरह रखूंगा और खूब मजदूरी दूंगा।"

अच्छी मजदूरी पाने के लालच में दीपा उसके साथ चल तो दी लेकिन रास्ते में कई बार उसके मन में आया कि वह भाग जाए, पर बूढ़ा बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था। कुछ



देर बाद वे दोनों एक विचित्र-से मकान के पास पहुंच गए।

बूढ़ा दीपा को मकान में ले गया। एक बड़े कमरे में चारों तरफ लकड़ी, लोहे तथा सोने-चांदी से बनी अनेक प्रतिमाएं थीं। बूढ़े ने दीपा से बैठ जाने के लिए कहा। फिर उसने ताली बजाई। एक नौकरानी कमरे में दाखिल हुई। बूढ़े ने उसे खाना लाने की आज्ञा दी। दीपा

को जोरों की भूख लगी थी। उसने पेट भर भोजन किया।

इसके बाद वह बूढ़ा दीपा से बोला--"तुम्हें रोज इसी तरह बढ़िया भोजन मिलेगा। बस, इसके बदले में तुम्हें मेरा काम करना होगा।" बूढ़े ने दीपा को एक पुतला दिखाया और कहा--"तुम्हें ऐसे ही बीस पुतले और बनाने होंगे। मैं दस दिन के लिए बाहर जा रहा हूं, तुम कल से ही अपना काम शुरू कर देना।" यह कहकर बूढ़े ने फिर ताली बजाई। नौकरानी दीपा को एक छोटे, किंतु सुंदर कमरे में ले गई। दीपा ने सोने की बहुत कोशिश की, पर उसे नींद नहीं आई। वह डर से रोने लगी।

दीपा को रोता देखकर उसकी बनाई गुड़िया बोलने लगी। उसने दीपा को कहा--"डरो मत। मैं जो तुम्हारे पास हूं। यह बूढ़ा एक दुष्ट जादूगर है। अपने जादू से इसने कई राजा तथा राजकुमारों को कैद कर रखा है। जादूगर ने एक ऐसी दवा बनाई है, जिसे निर्जीव चीजों पर छिड़कने से वे जीवित हो जाती हैं। जो पुतले वह तुमसे बनवाना चाहता है, वे बहुत ही भयंकर किस्म के हैं। उन पुतलों में प्राण डालकर जादूगर सारे संसार में तहलका मचाना चाहता है।" गुड़िया बोली- "पर तुम डरो नहीं। वैसा ही करना, जैसा मैं कहूं। अब तुम चैन से सो जाओ।" गुड़िया को बोलते सुन दीपा भौचक्की रह गई।

फिर सोचा--'चलो, कोई तो है मेरे साथ।' अगली सुबह बूढ़ा कहीं चला गया। जाते-जाते वह मकान के बाहर ताला लगा गया ताकि दीपा कहीं भाग न सके। जादूगर के जाने के बाद गुड़िया ने दीपा से कहा- "मिट्टी के दस सिपाही बना दो। फिर जादूगर की बनाई हुई दवा ढूंढ़कर उन पर छिड़क दो। जब वे जीवित हो जाएं तो उनको छिपाकर जादूगर का इंतजार करना।"

दीपा ने मिट्टी के दस सिपाही बना लिए। अब उसे वह दवा ढूंढनी थी। उसने सारा घर छान मारा, पर उसे दवा न मिली। दीपा ने नौकरानी से पूछा। उसने सोचा--'शायद मुझे भी जादूगर के चंगुल से मुक्ति मिल जाए।' इसलिए उसने दीपा को गुप्त स्थान बता दिया। वहां अनेक डरावनी चीजें रखी थीं। काफी खोजबीन के बाद दीपा को एक शीशी मिल गई। उसमें रंगीन-सा पानी था। दीपा ने उस पानी की कुछ बूंदें अपने बनाए पुतलों पर छिड़क दीं। वे जीवित हो गए।

ठीक दस दिन बाद जादूगर लौट आया। उसने दीपा से पूछा--"क्या तुमने अपना काम पूरा कर लिया है।"

दीपा ने निर्भीक होकर उत्तर दिया--"मैंने एक भी पुतला नहीं बनाया।"

यह सुनकर जादूगर आग-बबूला हो उठा। वह दीपा पर झपटने ही वाला था कि दीपा ने ताली बजा दी। ताली बजाते ही छिपे हुए दसों सिपाही निकल आए। उन्होंने जादूगर को घेरकर मार दिया।

दीपा ने बाकी दवाई उन प्रतिमाओं पर छिड़क दी, जो बड़े कमरे में रखी थीं। वे भी जीवित हो उठीं। उनमें अनेक राजा, राजकुमार थे। सब दीपा का धन्यवाद करके अपने-अपने राज्यों में लौट गए। दीपा उस किलेनुमा मकान में ही रहने लगी।

गांव का देवता

एक था कुम्हार। वह मिट्टी के बर्तन, घड़े और खिलौने बनाकर बेचता था। इन सब चीजों को बनाने के लिए जब उसे मिट्टी की जरूरत पड़ती तो वह गांव के बाहर तालाब के किनारे से मिट्टी ले आता। उसकी बनाई हुई चीजें गांव वाले अच्छे दामों में खरीद कर ले जाते थे। इसी से उसका गुजारा अच्छी तरह हो जाता था। परंतु अपने इस जीवन से कुम्हार संतुष्ट नहीं था। वह बहुत अमीर बनना चाहता था।

एक दिन की बात है, कुम्हार तालाब के किनारे मिट्टी लाने गया। वहां जाकर वह अभी मिट्टी खोद ही रहा था कि अचानक उसे किसी के हंसने की आवाज सुनाई दी। आवाज सुनकर कुम्हार चौंक गया और इधर-उधर देखने लगा परंतु उसे वहां कोई भी दिखाई नहीं दिया।

वह फिर से मिट्टी खोदने लग गया। थोड़ी देर बाद उसे फिर उसी तरह हंसने की आवाज सुनाई दी। अब की बार घबराकर वह इधर-उधर देखने लगा। जब उसे फिर वहां कोई नहीं दिखाई दिया तो वह बहुत हैरान हुआ। उसने जोर से पुकारा– ''कौन है भाई! इस तरह हंस क्यों रहे हो? मेरे सामने क्यों नहीं आते?''

कुम्हार की बात सुनकर एक आवाज आई--''मैं तो तुम्हारे पीछे वाले नीम के पेड़ पर बैठा हूं। मैं तुम्हारी नासमझी पर हंस रहा हूं।''

यह सुनकर कुम्हार ने पीछे मुड़कर देखा। पीछे नीम के पेड़ पर एक आदमी बैठा हुआ था, जिसने रंग-बिरंगे वस्त्र पहने हुए थे।

उसे देखकर कुम्हार बोला--''अच्छा तो तुम हो? बताओ, मैंने क्या नासमझी की है?''

यह सुनकर वह आदमी बोला--''तुम इतने दिनों से मिट्टी के बर्तन बनाकर बेच रहे हो। बताओ, क्या मिलता है इससे?''

कुम्हार बोला--''बस, मुझे दो वक्त की रोटी मिल जाती है। ''

यह सुनकर वह आदमी हंसा और बोला--''उंह दो वक्त की रोटी, बस यही न। क्या



तुम्हारे पास अच्छा मकान है, बढ़िया कपड़े हैं, और सवारी करने के लिए घोड़े हैं?''

कुम्हार ने यह बात सुनकर सिर झुका लिया और बोला--''नहीं, यह सब तो नहीं है मेरे पास।''

वह आदमी फिर बोला--''बोलो, क्या तुम यह सब चाहते हो?''

कुम्हार बोला--''क्यों नहीं!''

इस पर वह आदमी बोला--''फिर तुम्हें वह सब करना होगा, जो मैं कहता हूं। बोलो, मंजूर है।''

कुम्हार बोला--''हां, हां, मैं वह सब करूंगा, जो तुम कहोगे।''

यह सुनकर वह आदमी बोला--''सुना है कि तुम्हारे गांव में एक वैद्य रहता है जो हर तरह की बीमारियों का इलाज कर सकता है। उसके इलाज के कारण तुम्हारे गांव में कोई व्यक्ति अधिक समय तक बीमार नहीं रहता है। वह वैद्य अपनी सभी जड़ी-बूटियां एक अलग झोंपड़ी में रखता है। तुम मुझे थोड़ी-थोड़ी करके वह जड़ी-बूटियां चुराकर ला दोगे, तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा। कुम्हार के मन में तो लालच घर कर चुका था। उसने बिना कुछ सोचे-समझे कहा--''ठीक है, मैं आज रात से ही यह काम

शुरू कर दूंगा, तुम मुझे यहीं मिलना। यहीं तुम्हें मैं वह जड़ी-बूटियां ला दिया करूंगा। परंतु मुझे अपना इनाम समय पर मिलना चाहिए।

उस रात कुम्हार ने वैद्य के घर चोरी की और तालाब के किनारे आ गया। वह आदमी वहां पर पहले से ही खड़ा था। जब उसने कुम्हार को देखा तो अपने पास से एक मुहरों से भरी थैली निकाली और कुम्हार को दे दी। कुम्हार थैली पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और खुशी-खुशी अपने घर वापस चला गया।

वह कई रातों तक ऐसा ही करता रहा। यहां तक कि किसी को कानों-कान भी खबर नहीं हुई। जब वैद्य को पता चला कि उसकी जड़ी-बूटियां चोरी हो रही हैं, तो वह बहुत परेशान हुआ। उसने बहुत निगरानी भी रखी परंतु वह चोर को न पकड़ सका।

आखिर एक दिन ऐसा आ पहुंचा कि वैद्य की सारी जड़ी-बूटियां चोरी हो गईं और जब बीमार लोग उसके पास इलाज के लिए आते तो उसे उनको मना करना पड़ता। फलस्वरूप गांव के लोग बीमार व दुखी रहने लगे। वैद्य को नए सिरे से जड़ी-बूटियां इकट्ठी करने के लिए काफी समय चाहिए था।

उधर इन सब बातों से बेखबर कुम्हार चोरी की जड़ी-बूटियों के बदले जो मुहरें मिलती थीं, उनको एक घड़े में इकट्ठा करता जा रहा था। एक रात को जब वह कुछ आखिरी बची जड़ी-बूटियां चुराकर ले जा रहा था तो अचानक उसके पेट में जोरों से दर्द उठा। दर्द इतना तेज था कि उससे एक कदम भी आगे नहीं चला जा रहा था। वह रास्ते में ही गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

सुबह जब लोगों ने कुम्हार को बेहोश पड़े हुए देखा तो वे उसे उठाकर वैद्य के पास ले गए। वैद्य ने उसका निरीक्षण किया और कुछ जड़ी-बूटियां लेने के लिए अपने झोंपड़े में गया। परंतु कुछ समय पश्चात ही वह निराश होकर वापस आ गया क्योंकि झोंपड़े में से कल रात बाकी बची जड़ी-बूटियां भी गायब हो गई थीं।

तभी उसको कुम्हार के पास पड़ी हुई एक पोटली दिखाई दी। उसने उत्सुकतावश उस पोटली को खोला तो उसमें कुछ जड़ी-बूटियां निकली। वैद्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। परंतु उस समय वह सब कुछ भूलकर उन जड़ी-बूटियों से कुम्हार का इलाज करने लगा।

कुछ ही देर में कुम्हार के पेट का दर्द शांत हो गया। जब उसने अपने आसपास सब लोगों को इकट्ठा देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। परंतु जब उसने वैद्य को भी देखा तो उसे सब कुछ याद आ गया। वह सारी बात समझ गया, तब उसे बड़ी शर्म आई।

अगले दिन रात के समय उसने सारी मुहरें इकट्ठी कीं तथा तालाब के किनारे आ गया। वही आदमी कुम्हार का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। कुम्हार ने उसे मुहरें देते हुए कहा--''मुझे नहीं चाहिए ऐसा धन, जो सिर्फ मुझे खुशी दे। अपनी मुहरें वापस ले लो तथा वैद्य की सारी जड़ी-बूटियां लौटा दो ताकि वह बीमार व दुखी लोगों की सेवा कर सके।''

यह सुनकर वह आदमी मुस्कराया और बोला--''मैं तो तुम्हारी परीक्षा ही ले रहा था। मुझे खुशी है कि तुम्हें अपनी भूल समझ में आ गई। जाओ, यह मुहरें भी रखो तथा वैद्य को भी उसकी जड़ी-बूटियां वापस मिल जाएंगी। हां, एक बात याद रखना। आगे से कभी बिना सोचे-समझे रुपये के पीछे भत भागना। हो सके तो यह बात अपने अन्य साथियों को भी सिखाना। यही मेरी इच्छा है।''

अगले दिन वैद्य की झोंपड़ी फिर जड़ी-बूटियों से भर गई। कुम्हार बड़ा प्रसन्न हुआ। उन मुहरों से कुम्हार ने गांव में बीमारों के लिए एक अस्पताल खुलवाया जहां सभी गरीब एवं दुखी लोगों का मुफ्त इलाज होने लगा।

नानी का घर

एक था गोनू। प्यारा, नटखट लड़का। वैसे तो वह बड़ा समझदार था पर एक दिन अपनी मां से जिद करने लगा- ''मां, मैं नानी के घर जाऊंगा। मेरे सभी साथी नानी के घर जाते हैं, तुम मुझे कभी नहीं लेकर जाती। मैं तुम्हारे पास रहते-रहते उब गया हूं। बताओ ना, नानी कहां रहती हैं?''

मां बेचारी क्या कहती ! वह तो अनाथ थी। माता-पिता का घर तो क्या वह नाम भी नहीं जानती थी। पर यह सब बातें वह गोनू को नहीं बताना चाहती थी। वह नहीं चाहती थी कि गोनू अभी से जीवन की कठोर सच्चाई को जाने। सो उसने झूठ-झूठ ही कह दिया-

''बेटा, तुम्हारी नानी तो बहुत दूर रहती हैं, नीले पर्वत के उस पार। मैं और तुम तो वहां कभी नहीं पहुंच सकते। बड़ा कठिन रास्ता है। मैं बूढ़ी हूं और तुम बहुत छोटे हो। जब तुम बड़े हो जाओगे तो वहां चले जाना।''

गोनू ने मां की बात बड़े ध्यान से सुनी और मन ही मन सोचा-''मां मुझे बहुत छोटा और कमजोर समझती है, जैसे मैं दूध पीता बच्चा हूं। मैं भी मां को दिखा दूंगा, मैं क्या हूं।''

दिन भर गोनू को चैन नहीं पड़ा। जैसे ही रात हुई, दिन की थकी-हारी मां सोने चली गई और गोनू को भी सोने को कह गई।

पर गोनू की आंखों में नींद कहां! वह तो कुछ और ही सोच रहा था। मन ही मन उसने नानी के पास नीले पर्वत के पार जाने की योजना बना ली थी। एक छोटी-सी पोटली में दो जोड़ी कपड़े लिए। मां ने उसके नाश्ते के जो लड्डू बनाए थे, वे भी रखे और चल पड़ा नानी से मिलने।

चलते-चलते वह नीले पर्वत के उस पार पहुंच गया। वह काफी थक गया था और उसे भूख भी लगी थी। सो खाने और विश्राम करने का ठिकाना ढूंढने लगा।

उसे आस-पास कोई घर नजर नहीं आया। 'बड़ी अजीब हैं नानी, जो यहां अकेली सुनसान जगह में रहती हैं ' -उसने सोचा। ढूंढते-ढूंढते उसे एक झोंपड़ी नजर आई। वह झोंपड़ी के अंदर गया।


P. SEN

उस झोंपड़ी में एक डायन रहती थी। गोनू ने उसे देखा तो डर गया। बड़े-बड़े पांव, चपटी नाक और रस्सी जैसे बाल!

डरते-डरते बोला- ''मैं भूखा हूं, क्या कुछ खाने को मिलेगा?''

वीराने में एक बच्चे को देखकर डायन बड़ी हैरान हुई और बोली- ''हां, हां मिलेगा पर तुम कौन हो और यहां क्यों आए हो?''

गोनू ने उसे सारी बात बता दी। बात सुनकर डायन बड़ी खुश हुई और बोली-''अरे बेटा, मेरे पास आ जाओ मेरी गोद में। मैं ही तो हूं तुम्हारी नानी।'' पर गोनू को तो उससे डर लग रहा था। उसने अपने दोस्तों की नानी को देखा था। कोई गोरी थी तो कोई काली पर ऐसी नानी तो किसी की नहीं थी।

'जरूर दाल में कुछ काला है' - उसने सोचा। डायन भी उसकी बात को भांप गई। बोली- ''बेटा क्या कहूं, एक बीमारी की वजह से मेरी यह हालत हो गई है। पर तुम डरो मत, मैं तुम्हें बहुत प्यार करूंगी। तुम आराम कर लो। कुछ ही देर में तुम्हें घुमाने ले जाऊंगी।''

गोनू झोंपड़ी के एक कोने में दुबककर लेट गया।

डायन गोनू को आया देखकर फूली नहीं समा रही थी। उसे कई दिन हो गए थे आदमी का मांस खाए। आज उसे घर बैठे ही अपना शिकार मिल गया था।

गोनू को सोया जान वह वहां से चली गई।

वहां से कुछ ही दूरी पर एक और झोंपड़ी थी जिसमें डायन अपना खाना पकाती थी। डायन उस झोंपड़ी में गई। चूल्हे पर कड़ाही रखी और उसमे तेल भरा। आग जलाकर उसे खूब गर्म किया। यह सब करके वह वापिस उसी झोंपड़ी में गोनू को लेने आई। शायद वह गोनू को तलकर खाना चाहती थी!

पर जैसे ही वह झोंपड़ी के अंदर गई तो यह देखकर बड़ी हैरान हुई कि गोनू वहां से गायब था। 'कहां गया होगा'- वह सोचने लगी। उसकी नजरें चारों ओर उसे ढूंढने लगी।

उधर गोनू डायन से छिपते-छिपते काफी दूर निकल गया। वहां उसे काफी मकान और चहल-पहल दिखाई दी। वह जानता था कि डायन उसका पीछा कर रही होगी, सो वह एक मकान में छिप गया।

वह मकान एक बुरे आदमी का था। वह एक होटल चलाता था। उस होटल में काम करने के लिए उसके पास करीब दस छोटे-छोटे बच्चे थे। उसने गोनू को अपने घर में छुपा देखा तो वह समझ गया कि वह कोई भटका हुआ बच्चा है। वह गोनू को बड़े प्यार से बोला-

''बच्चे, चिन्ता मत करो यहां तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। आराम से रहो, खाओ-पियो, बस बदले में थोड़ा-सा काम करना पड़ेगा।'' -यह कहकर वह गोनू को काम समझाने लगा। गोनू समझ गया कि यह कोई भला आदमी नहीं है। यह छोटे बच्चों की मजबूरी का फायदा उठाकर उनसे रात-दिन काम करवाता है।

''अभी तो मुझे नींद आ रही है, सुबह मैं सारा काम कर लूंगा'' -गोनू ने कहा।

''ठीक है, अभी तुम सो जाओ'' -कहकर उस आदमी ने गोनू को सोने की जगह बता दी।

गोनू सोने का नाटक करने लगा। कुछ ही देर में जब सब सो गए तो वह दबे पांव वहां से भाग गया।

भागते-भागते वह काफी थक गया था। 'कहां जाऊं, क्या करूं'- अभी वह यह सोच ही रहा था कि उसकी नजर सामने एक मंदिर पर पड़ी।

'अरे वाह! कितना सुंदर मंदिर है।' -उसे याद आया ऐसा मंदिर तो उसके गांव में भी है और पास में फूलों की दुकान, फिर पनवाड़ी की, फिर कपड़े की। ''अरे! यह तो बिल्कुल हमारे गांव जैसा ही है। अरे, मैं भी कितना बेवकूफ हूं जो अपने गांव को नहीं पहचान रहा''-वह खुशी से चिल्लाया, ''मैं वापिस अपने गांव आ गया हूं।''

वहां से भागा-भागा वह अपने घर गया और मां के चरणों में गिर पड़ा। रोते-रोते बोला, ''मां-मां तुम ही सबसे अच्छी हो। मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। तुम ही मेरी मां हो, नानी हो, सब कुछ हो।''

बुढ़िया की पोटली

एक बार की बात है किसी गांव में दो बहनें लोटी और खोटी रहती थीं। लोटी बड़ी ही समझदार और भली लड़की थी। इसके विपरीत खोटी बड़ी ही नासमझ और लड़ाकी थी। लोटी घर का सारा कामकाज करती और पड़ोसियों की भी सहायता करती। इसके विपरीत खोटी घर का कुछ कामकाज नहीं करती और सारे दिन पड़ोसियों से भी लड़ती-झगड़ती रहती।

लोटी अपनी बहन के स्वभाव से बड़ी परेशान थी। वह रोज उसको समझाती पर वह उसकी एक न सुनती थी। एक दिन की बात है लोटी और खोटी मेले में गईं। वहां पर उन्होंने खूब खेल-तमाशे देखे। कुछ ही देर में रात ढल गई। लोटी और खोटी दोनों घर लौटने लगीं।

रास्ते में एक जंगल पड़ता था। जब वे दोनों जंगल के मध्य में पहुंची तो उनको एक जगह कुछ प्रकाश दिखाई दिया। उस प्रकाश में कुछ परियां नाच रही थीं। उन परियों के पंख उनके पास ही पड़े हुए थे। जब खोटी ने वह पंख देखे तो वह लोटी से पंख लेने की जिद करने लगी।

लोटी ने एक परी के पास जाकर बोला--''परी रानी, मेरी बहन को एक जोड़ी पंख चाहिए, क्या आप मुझे पंख दे सकती हैं?

लोटी की बात सुनकर परी बोली--''क्यों नहीं। परंतु आज नहीं, आज तो हमारे पास सिर्फ हमारे ही पंख हैं। अगली बार मैं तुम्हारे लिए भी एक जोड़ी पंख ले आऊंगी।''

परी की बात सुनकर लोटी तो खुश हो गई परंतु खोटी को बहुत गुस्सा आया। उसने परी से कहा--''अगर तुम मुझे आज ही पंख नहीं दोगी तो मैं तुम्हारे पंख छीन कर भाग जाऊंगी।''

खोटी की बात सुनकर परी को भी गुस्सा आ गया। उसने खोटी को अपनी जादू की छड़ी से पत्थर की मूर्ति बना दिया। अपनी बहन की यह हालत देखकर लोटी की आंखों में आंसू आ गए। वह परी के चरणों में गिर पड़ी और बोली--''परी दीदी! मेरी बहन छोटी व नासमझ है, उसे माफ कर दो।''


P. SEN

यह सुनकर परी को लोटी पर तरस आ गया। वह बोली--"मैं एक शर्त पर ही तुम्हारी बहन को फिर से ठीक कर सकती हूं। तुम्हारी बहन को एक साल तक हमारे लिए गेंदे के फूलों की माला बनानी होगी। अगर किसी दिन भी फूल बासी हुए या समय से माला नहीं मिली तो वह हमेशा पत्थर की ही बनी रहेगी। यह कहकर उसने खोटी को एक बार फिर से जीवित कर दिया।"

खोटी चुपचाप अपनी बहन के साथ घर लौट गई। उसको परी द्वारा रखी गई शर्त मालूम पड़ गई थी। अगले दिन वह तड़के उठी और बगीचे में गई। वहां से उसने ताजा गेंदे के फूल तोड़े व झटपट सुंदर-सुंदर माला तैयार की। फिर वह उस माला को जंगल में उसी पेड़ के पास रख आई, जहां पिछली रात परियां नाची थीं। इस तरह वह 364 दिन तक करती रही।

आखिर माला देने का अंतिम दिन भी आ गया। खोटी सुबह जल्दी-जल्दी उठी व खुशी-खुशी बगीचे में गई। वहां जाकर क्या देखती है कि वहां से सब गेंदे के फूल गायब हैं। यह देखकर खोटी उदास हो गई। उसने सोचा यदि परी को आज माला न मिली तो वह फिर से मुझे पत्थर की मूर्ति बना देगी। वह बैठकर रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुनकर वहां पर एक बुढ़िया आई। उसके सिर पर एक बड़ी पोटली थी। उसने खोटी से कहा--"बेटी, जरा मेरे सिर से यह पोटली तो उतार दो, बहुत भारी है।" अगर यह पहले वाली खोटी होती तो बुढ़िया को दुत्कार देती, परंतु अब तो वह काफी बदल चुकी थी। उसने कहा--"अच्छा अम्मां, अभी उतार देती हूं।" यह कहकर उसने बुढ़िया के सिर से पोटली उतार दी।

तब बुढ़िया ने पूछा-- "बेटा, क्या बात है तुम इतनी उदास क्यों हो? खोटी ने बुढ़िया को सारी बात सच-सच बता दी। खोटी की बात सुनकर बुढ़िया बोली--"बस, इतनी-सी बात के लिए उदास हो। देखो तो मेरी पोटली में क्या है? खोटी ने पोटली खोली तो वह बहुत खुश हुई क्योंकि पोटली में बहुत सारे ताजे गेंदे के फूल थे। बुढ़िया ने खोटी से कहा- "इसमें से तुम जितने फूल चाहो, ले सकती हो।"

खोटी ने उसमें से कुछ फूल ले लिए और माला बनाई। माला लेकर वह जल्दी से जंगल में उसी पेड़ के पास गई, जहां परी उसका इंतजार कर रही थी। खोटी को देखकर परी ने कहा- "आज से तुम्हारी सजा खत्म हुई। मैंने तुम्हें परखने के लिए ही यह खेल रचा था। वह बुढ़िया कोई और नहीं मैं ही थी। बाग के फूल भी मैंने ही गायब किए थे। तुम अपनी परीक्षा में सफल रही हो। अब तुम अपने घर लौट जाओ।"

खोटी खुशी-खुशी अपने घर लौट आई। उस दिन के बाद से उसका स्वभाव बिल्कुल बदल गया। अब वह भी अपनी बहन की तरह एक भली लड़की बन गई।

अनोखा सपना

एक था दर्जी अनोखेलाल। वह बेमिसाल कारीगर था। कमाल के कपड़े सिलता था। इसीलिए नगर के अधिकतर लोग उसी से कपड़े सिलवाते थे।

हालांकि अनोखेलाल कपड़ों की सिलाई ठोक-बजाकर लेता था और उसी में उसके वारे-न्यारे हो रहे थे। फिर भी वह बड़ा लालची था। और इसी लालच के कारण वह अपने ग्राहकों से जरूरत से कुछ अधिक ही कपड़ा मंगवाता था। बेचारे भोले ग्राहक क्या जानते, कितना कपड़ा चाहिए। वह जितना कपड़ा मांगता था, वो लाकर दे देते थे। और अनोखेलाल उसमें से काफी कपड़ा बचा लेता था। यदि भूले से कोई ग्राहक बचा हुआ कपड़ा मांग भी लेता तो अनोखेलाल बड़ी चतुराई से उसे टाल जाता था।

एक बार की बात है, एक गरीब बुढ़िया अनोखेलाल के पास आई। उसके पास एक बहुत बड़ा कपड़ा था। कपड़ा दिखाकर उसने अनोखेलाल से कहा– ''बेटा, मेरे पास यह कपड़ा बहुत दिनों से पड़ा है। इसमें से तुम मेरे लिए एक कमीज-शरारा बना दो।''

''ठीक है'', अनोखेलाल ने कहा– और नाप लेकर कापी में लिख दिया।

– ''बेटा, कब आऊं?'' – बुढ़िय़ा ने पूछा।

''एक हफ्ते बाद'' –अनोखेलाल ने उत्तर दिया।

बुढ़िया के जाने के बाद अनोखेलाल ने फिर से कपड़ा देखा। कपड़ा काफी ज्यादा था। अनोखेलाल मन ही मन बहुत खुश हुआ।

एक हफ्ते बाद बुढ़िया अपने कपड़े लेने आ गई।

अनोखेलाल ने उसे सिले कपड़े दे दिए और सिलाई मांगी।

बुढ़िया ने उसे सिलाई देते हुए कहा– ''बेटा, कपड़ा तो बहुत ज्यादा था, बचा ही होगा। मुझे वह बचा हुआ कपड़ा लौटा दो।''

यह सुनकर अनोखेलाल ने कहा– ''क्या बात कहती हो अम्मां, मुश्किल से तो तुम्हारे कपड़े तैयार किए हैं, तुम कपड़ा बचने की बात कहती हो।''

''कोई बात नहीं बेटा। दे देते तो मैं भी किसी को दे ही देती। मुझे अब क्या करना है। न जाने कब बुलावा आ जाए और परलोक में तो खुदा के ही जिम्मे हैं सब काम।'' यह कहकर बुढ़िया चली गई। अनोखेलाल ने बुढ़िया की बात सुनी पर उसकी परवाह किए बिना वह अपने काम में लग गया।

उस रात जब अनोखेलाल सो गया तो उसे एक बड़ा विचित्र सपना आया। सपने में उसने देखा कि वह परलोक में है और उसके साथ उसके कई साथी हैं। वह बुढ़िया भी है, जिसके कपड़े उसने सिले थे। मजे की बात तो यह थी कि वहां सब निर्वस्त्र थे और भगवान सामने खड़े सबको वस्त्र बांट रहे थे। जिसको जैसा चाहिए, वैसा ही मिल रहा था। बांटते-बांटते गरीब बुढ़िया की बारी भी आई।

बुढ़िया को देखकर भगवान बोले- ''अम्मां, सारी जिंदगी तो तुमने गरीबी में पुराने वस्त्र पहनकर ही गुजार दी। अब परलोक में तो अपनी कुछ इच्छाएं पूरी कर लो।'' यह कहकर प्रभु ने बुढ़िया को बहुत सुंदर वस्त्र दिए। वस्त्र पाकर बुढ़िया प्रसन्न हो गई।

''यह सब देखकर अनोखेलाल मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहा था। जब मेरी बारी आएगी तो मैं बहुत सुंदर वस्त्र लूंगा'' -उसने सोचा।



और अनोखेलाल की बारी आई। भगवान ने उसकी ओर देखा और मुस्कराए। फिर बोले– ''अरे अनोखेलाल, तुम भी बिना वस्त्रों के। तुम्हें वस्त्रों की क्या कमी! तुमने तो पूरी जिंदगी अपने लिए वस्त्र जोड़ने में ही लगा दी। तुम्हारा तो उन्हीं से गुजारा हो जाएगा।''

यह कहते हुए भगवान ने अनोखेलाल को भी वस्त्र दिए। पर यह देखकर अनोखेलाल दंग रह गया कि उसके वस्त्र उन्हीं कपड़ों को जोड़-जोड़ कर बनाए गए थे जो-जो उसने अपने ग्राहकों के कपड़ों से बचा लिए थे। बुढ़िया का बचा हुआ कपड़ा भी उसमें जुड़ा था।

अनोखेलाल का सिर शर्म से झुक गया और आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। वह भगवान के चरणों में गिर पड़ा और बोला– ''भगवन, मुझे माफ कर दीजिए। मैं सारी जिंदगी सबसे झूठ बोलता रहा पर यह भूल गया कि आप अंर्तयामी हैं।''

वह स्वप्न में अभी यह बोल ही रहा था कि अचानक उसकी नींद खुल गई। सुबह हो गई थी। ''हे भगवान! यह कैसा स्वप्न था!'' –वह बोला।

और उस दिन से अनोखेलाल ने निश्चय किया कि वह कभी कपड़े की चोरी नहीं करेगा। शायद वह अपना परलोक सुधारना चाहता था।

कबूतर उड़ गए

राजा कुशालसिंह बड़ा ही नेक व पराक्रमी राजा था। उसके पास अपार धन-दौलत थी। वह प्रजा की भलाई के कामों में लगा रहता था। प्रजा भी राजा से खुश थी। पड़ोसी राजा कुशालसिंह की खुशहाली और लोकप्रियता से जलते थे, परंतु कुशालसिंह के राज्य की शक्ति के आगे उनका कोई जोर नहीं चलता था।

एक बार राजा ने सोचा कि क्यों न राज्य में कुछ मंदिर बनवाए जाएं। उसने अपने मंत्री से कहा--''हमारे राज्य में मंदिर बहुत कम हैं। नगरवासियों को पूजा-अर्चना में असुविधा होती होगी। मेरे विचार से राज्य में कुछ अच्छे मंदिरों का निर्माण होना चाहिए। उन मंदिरों में भगवान की सोने की मूर्तियां स्थापित हों। मंदिर तथा उनकी मूर्तियां कला के उत्कृष्ट नमूने होने चाहिए।''

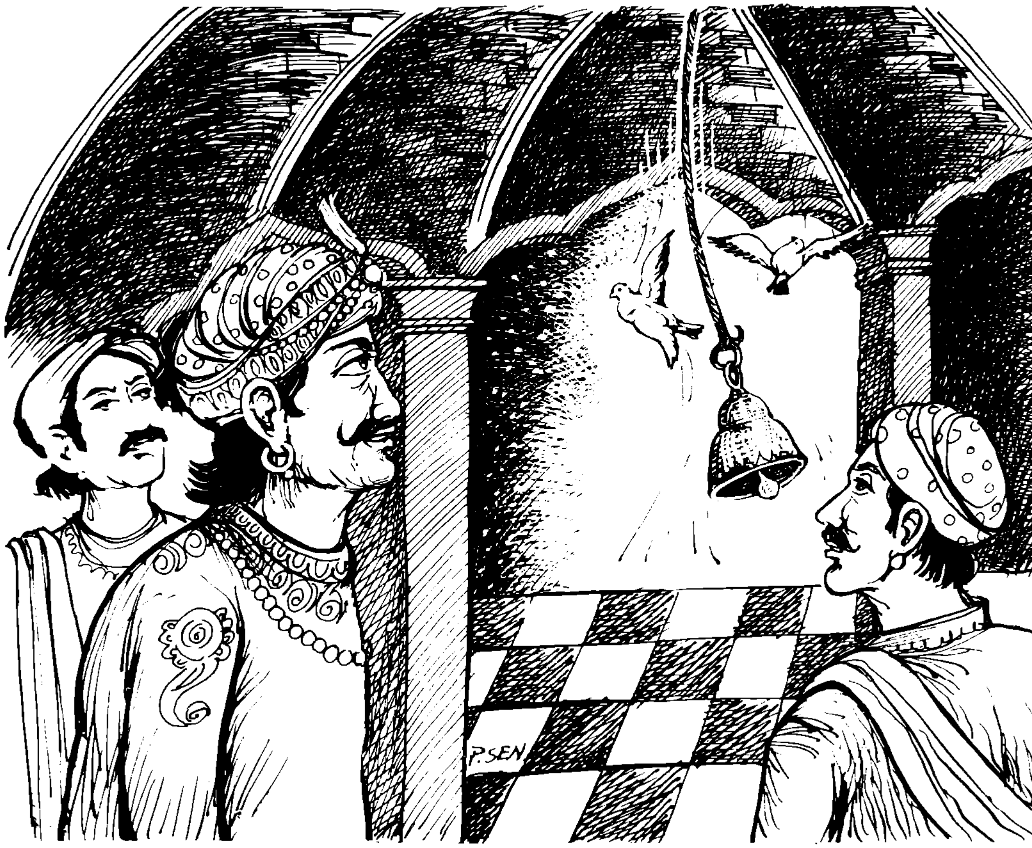
मंत्री बोला--''ठीक है महाराज, जैसी आपकी आज्ञा।''

अगले दिन से ही मंदिरों का निर्माण कार्य शुरू हो गया। विभिन्न राज्यों के कारीगरों को काम पर लगाया गया। राजा कभी-कभी स्वयं जाकर राजधानी के मंदिरों के काम का निरीक्षण करता था। मूर्तिकारों को मूर्तियां बनाने का पारिश्रमिक सोना तथा हीरे-जवाहरातों में दिया जाता था। कारीगरों की पूरी निगरानी भी रखी जाती थी। शीघ्र ही तीन-चार मंदिर बनकर तैयार हो गए। मंदिर बहुत ही दर्शनीय बने थे। भगवान की मूर्तियों की शोभा तो देखते ही बनती थी। राजा कारीगरों की कला देखकर प्रसन्न हो गया।

शुभ मुहूर्त में मंदिर दर्शनार्थियों के लिए खोल दिए गए थे। इन मंदिरों में पुजारी रखे गए। देखभाल के लिए सेवक भी रखे गए। एक दिन राजा सुबह सोकर उठा, तो उसे महल के बाहर कुछ शोर सुनाई दिया। वह बाहर आया। आकर देखा, महल के बाहर काफी लोग इकट्ठे थे। राजा ने पूछा--''क्या बात है? आप सब इतने परेशान क्यों हैं?''

भीड़ में से एक आदमी आगे बढ़ा। बोला--''महाराज, गजब हो गया। सभी मंदिरों में से मूर्तियां गायब हो गईं।'' यह बात सुनकर राजा भी आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा--''यह कैसे हुआ?'' क्या पुजारी ने रात को मंदिर में ताला नहीं लगाया था?''

वह आदमी बोला--''नहीं महाराज, पुजारी जी ने ताला लगाया था। सब दरवाजे भी



भली-भांति बंद किए थे, फिर भी चोरी हो गई।'' राजा यह सुनकर और भी हैरानी से बोला--''अच्छा, यह तो बड़ी ताज्जुब की बात है''। फिर उसने सिपाहियों से कहा--''तुम जाकर पता लगाओ, चोर किधर से आए?''

सिपाही गए। कुछ देर बाद लौट आए। बोले--''महाराज, हमने अच्छी तरह निरीक्षण किया है। दीवारों में सेंध का कोई निशान नहीं है। सभी खिड़कियां तथा दरवाजे सही-सलामत हैं। न ही फर्श कहीं से टूटा-फूटा हुआ है। समझ में नहीं आता, चोर अंदर कैसे आया?''

सारी बात सुनकर राजा ने कहा--''हमारे चलने की तैयारी करो। हम स्वयं देखेंगे कि माजरा क्या है?'' जब राजा आखिरी मंदिर देख रहा था, तो उसने मंदिर के सभी दरवाजे तथा खिड़कियां अंदर से बंद कर लिए। फिर वह सभी दीवारें देखने लगा। अचानक उसने देखा, मंदिर के घंटे पर दो कबूतर बैठे हैं। राजा बड़ा हैरान हुआ--''सभी दरवाजे-खिड़कियां बंद हैं। मंदिर में कहीं पर भी इतना बड़ा सूराख नहीं है कि कबूतर अंदर आ जाएं। फिर ये कबूतर कहां से आए?'' उसने अपने सिपाहियों से कहा--''कबूतरों को डराकर उड़ाओ।''

सिपाहियों ने कबूतरों को डराया। वे उड़े। काफी देर तक तो वे मंदिर में इधर-उधर चक्कर काटते रहे। फिर मंदिर की छत की ओर उड़ चले। वहां एक-दो चक्कर काटने के बाद वे गायब हो गए। राजा सोचने लगा--"मंदिर की छत पक्की बनी हुई है। इसमें कोई दरार या छेद भी नजर नहीं आता, फिर कबूतर कहां गायब हो गए?" उसने सिपाहियों से कहा--"मंदिर की छत पर चढ़ो। पता लगाओ, इसमें कहीं कोई सूराख तो नहीं है।"

सिपाही मंदिर की छत पर चढ़े। उन्होंने देखा, मंदिर की छत इस प्रकार बनी हुई है कि बाहर से देखने पर तो लगता है कि कोई सूराख नहीं है, परंतु उसमें एक बड़ा सूराख ऐसा बनाया गया है जिससे एक आदमी उसमें से मंदिर में प्रवेश कर सकता है। कबूतर उसी में से बाहर निकले होंगे।

नीचे उतरकर उन्होंने राजा को यह बात बताई। सुनकर राजा को कारीगरों पर अत्यंत क्रोध आया। साथ ही उनकी कला पर हैरानी भी हुई। उसने अपने सिपाहियों से कहा--"जिन कारीगरों ने यह मंदिर बनाया है, उन्हें पकड़कर ले आओ।"

सिपाही उन कारीगरों को पकड़ लाए। राजा ने पूछा--"बताओ, किसके कहने पर तुमने यह काम किया?" कारीगर डर गए। उनकी चोरी पकड़ी गई थी। उन्होंने कहा--"महाराज, हम पड़ोसी राज्य में रहते हैं। अपने राजा के कहने पर ही हमने यह काम किया।"

राजा ने पूछा--"चुराई हुई मूर्तियां कहां हैं? कारीगरों ने घबराकर जहां मूर्तियां छिपा रखी थीं, वह स्थान बता दिया।"

राजा ने मूर्तियां फिर से मंदिर में स्थापित करवा दीं। कारीगरों को राजा ने छोड़ दिया, क्योंकि इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी। पड़ोसी राजा को अपने दूत के हाथ राजा ने यह संदेश भिजवाया--"आपने यह बहुत ही घटिया काम करवाया है। हमारी मित्रता पुरखों से चली आ रही है। सोने के लालच में आपने जो काम किया है, उससे मुझे पता चल गया है कि आप कितने सच्चे मित्र हैं। साथ ही मैं सचेत भी हो गया हूं- "लालची के साथ मित्रता करना, अपने को धोखे में रखना है।"

पड़ोसी राजा ने यह संदेश पढ़ा, तो शर्म से उसकी गर्दन झुक गई। एक अच्छा मित्र देश खो दिया। सोना भी न मिला और एक शक्तिशाली राजा से दुश्मनी हुई सो अलग।

परोपकार का फल

एक था राजकुमार। बहुत ही वीर व चतुर। जब वह विवाह योग्य हो गया तो राजा को बड़ी चिंता हुई क्योंकि राजकुमार को कोई लड़की पसंद ही नहीं आती थी। हारकर राजा ने कहा- ''जाओ, खुद जाकर देखो अपनी पसंद की लड़की।''

यह सुनकर राजकुमार घोड़े पर सवार होकर अपने नगर से बाहर निकल पड़ा। चलते-चलते वह एक जंगल में जा पहुंचा। जंगल के मध्य में पहुंचकर उसे जोरों से कराहने की आवाज सुनाई दी। वह उस दिशा में बढ़ा, जिधर से आवाज आ रही थी।

उसने देखा कि किसी ने एक पेड़ के पास एक बूढ़े आदमी को रस्सियों से बांध रखा था। राजकुमार ने उस आदमी से पूछा- ''आप कौन हैं तथा आपको इस तरह से किसने बांध रखा है?'' यह सुनकर वह बूढ़ा आदमी आंखों में आंसू भर कर बोला- ''बेटा, मैं एक राजा हूं। मेरी बेटी को एक जादूगर उठाकर ले गया है। उसी ने मुझे पेड़ से बांधा है।''

यह सुनकर राजकुमार को दया आई। उसने तुरंत बूढ़े आदमी को खोला तथा पूछा- ''बाबा, क्या आप बता सकते हैं, वह जादूगर किस दिशा में गया है?

बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया- ''हां बेटा, वह दुष्ट मेरी बेटी को लेकर पूर्व दिशा की ओर गया है। उधर ही उसका किला भी है।''

यह सुनकर राजकुमार पूर्व दिशा की ओर चल पड़ा। काफी देर तक चलने के बाद उसको एक किला दिखाई दिया, जब वह किले के दरवाजे के पास पहुंचा तो उसने देखा कि वहां पर एक खूंखार कुत्ता पहरा दे रहा था।

उसने राजकुमार से पूछा-''तुम कौन हो? कहां जा रहे हो?''

राजकुमार पशु-पक्षियों की बोली समझता था। उसने कहा- ''मैं एक राजकुमार हूं तथा मुझे अंदर एक जरूरी काम है। कृपया मुझे जाने दो।''

यह सुनकर कुत्ते ने कहा- ''मैं कई दिनों से भूखा हूं, मेरा मालिक मुझे भरपेट खाना नहीं देता है। तुम पहले मुझे कुछ खाने को दो, तब मैं तुम्हे अंदर जाने दूंगा।''


P. SEN

यह सुनकर राजकुमार ने घोड़े पर से अपना थैला उतारा और उसमें जो कुछ खाने को था, कुत्ते को दे दिया।

जब कुत्ते की भूख मिट गई तो उसने राजकुमार को अंदर जाने दिया।

अंदर जाने पर राजकुमार ने देखा कि वहां एक और दरवाजा था। उस दरवाजे पर एक बूढ़ा आदमी पहरा दे रहा था। उस बूढ़े ने राजकुमार को रोककर पूछा- ''तुम कौन हो? कहां जा रहे हो।''

राजकुमार ने उत्तर दिया- ''मैं एक राजकुमार हूं तथा अंदर एक भले काम के लिए जा रहा हूं। कृपया मुझे जाने दो।''

यह सुनकर बूढ़े आदमी ने कहा- ''मुझे बहुत ठंड लग रही है। पहले मुझे कुछ ओढ़ने को दो। फिर मैं तुम्हें जाने दूंगा।''

यह सुनकर राजकुमार ने अपनी रेशमी अचकन उतार कर दे दी और कहा ''बाबा इसे ओढ़ लो।''

तब बूढ़े आदमी ने राजकुमार को अंदर जाने दिया।

भीतर जाकर राजकुमार ने राजकुमारी को चारों ओर ढूंढा परंतु राजकुमारी उसे कहीं नहीं मिली। अभी वह चारों ओर देख ही रहा था कि उसे एक पिंजरे में तोता दिखाई दिया।

राजकुमार ने तोते से पूछा- ''क्या तुमने यहां किसी राजकुमारी को देखा है, जिसे जादूगर पकड़ लाया है?''

यह सुनकर तोता बोला- ''पहले मेरा पिंजरा खोलकर मुझे आजाद करो। फिर मैं तुम्हें राजकुमारी का पता बताऊंगा।''

राजकुमार ने झट से पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। तोता उड़कर पिंजरे से बाहर निकल आया तथा बोला- ''राजकुमारी को बगीचे में तलाश करो। जो फूल सबसे सुंदर है, वही राजकुमारी है।''

राजकुमार बगीचे में गया। वहां तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। सभी फूल सुंदर थे, फिर भी राजकुमार को सूरजमुखी का एक फूल सबसे सुंदर लगा। राजकुमार ने वह फूल तोड़ लिया। फूल टूटते ही जमीन पर गिर पड़ा और पलक झपकते ही एक सुंदर-सी राजकुमारी बन गया। इतनी सुंदर लड़की उसने पहले कभी नहीं देखी थी। राजकुमार बहुत खुश हुआ। वह राजकुमारी को लेकर किले से बाहर निकल पड़ा।

तभी वहां पर जादूगर आ गया। जब उसने राजकुमार को राजकुमारी के साथ देखा तो वह आग-बबूला हो उनका पीछा करने लगा। जब वह उनको न पकड़ सका तो उसने तोते से कहा- ''जाओ, उन दोनों का पीछा करो।''

तोते ने कहा- ''राजकुमार ने मुझे पिंजरे की कैद से मुक्ति दिलाई है। मैं क्यों पकड़ूं उसे।''

तब जादूगर ने बूढ़े चौकीदार को कहा- ''जाओ, तुम दरवाजा बंद कर दो ताकि दोनों भागने न पाएं।''

बूढ़े चौकीदार ने कहा- ''मैं क्यों करूं दरवाजा बंद! राजकुमार ने मुझे ठंड से बचने के लिए कपड़ा दिया था।''

यह सनुकर जादूगर को बड़ा गुस्सा आया। वह आगे बढ़ा और कुत्ते से बोला- ''जाओ, जाकर दोनों को पकड़ लो और काट लो।''

यह सुनकर कुत्ते ने कहा- ''मैं उनको नहीं काट सकता। राजकुमार ने मुझे खाने को दिया था, मेरी भूख मिटाई थी।''

यह सब सुनकर जादूगर खुद राजकुमार व राजकुमारी का पीछा करने लगा, परंतु इतनी देर में तो वे दोनों बहुत दूर, जादूगर की पहुंच से बाहर निकल गए थे। जब राजकुमार राजकुमारी को लेकर उसके पिता के पास पहुंचा तो वह बहुत खुश हुए। उन्होंने राजकुमारी का हाथ राजकुमार के हाथ में दे दिया। राजकुमार को परोपकार के बदले में अपनी पसंद की राजकुमारी मिल गई थी।

टूटा हुआ संदूक

किसी गांव में एक बूढ़ी औरत रहती थी। उसके पास एक गाय और एक टूटे-फूटे संदूक के सिवाय कुछ नहीं था। वह गाय का दूध दुहती तथा उसे बेचकर अपना गुजारा करती थी। वह बिल्कुल अकेली थी। उसे गरीब और बेसहारा देखकर गांव के लोग उसकी मदद के लिए आते पर बूढ़ी औरत उन्हें यह कह कर लौटा देती कि मेरे पास सब कुछ है। मुझे कुछ नहीं चाहिए। इस पर गांव के लोग उसका मजाक उड़ाते- ''घर में बस एक टूटा-फूटा संदूक है। फिर भी कहती है, मेरे पास सब कुछ है। यह बुढ़िया जरा सनकी है।''

उसी गांव में एक अनाथ लड़का शम्भू भी रहता था। शम्भू बूढ़ी औरत की गाय के लिए घास लाता तथा उसके अन्य काम भी कर देता था। इसके बदले में बूढ़ी औरत शम्भू को थोड़ा दूध दे देती थी। शम्भू का दुनिया में कोई नहीं था। वह उस बूढ़ी औरत को ही अपना सब कुछ समझता था। बूढ़ी औरत भी शम्भू को अपने बेटे के समान चाहती थी।

एक दिन शम्भू गाय को नहला रहा था कि बूढ़ी औरत ने उसे गाय के मुंह में देखने को कहा। शम्भू ने गाय के मुंह में देखा। उसे गाय के पेट में सैकड़ों गायें दिखाई दीं। वह बड़ा हैरान हुआ पर कुछ न बोला।

काफी दिन बीत गए। बूढ़ी औरत बहुत बीमार हो गई। उसने शम्भू को अपने पास बुलाया और कहा--''बेटा, मेरी मृत्यु अब निकट आ रही है। मैं अपने जीवन के शेष दिन किसी शिवालय में गुजारना चाहती हूं इसीलिए मैं गाय को लेकर तीर्थयात्रा पर जा रही हूं। मेरा संदूक तुम अपने पास रख लो, शायद तुम्हारे कुछ काम आए।''

बूढ़ी अम्मां के तीर्थयात्रा पर जाने की बात सुनकर शम्भू उदास हो गया पर अम्मां के कहे अनुसार वह संदूक लेकर चला गया। रास्ते में उसने सोचा कि यदि अम्मां मुझे गाय देकर जाती तो शायद मेरे काम भी आती, यह टूटा-फूटा संदूक मेरे किस काम का। यही सब सोचते हुए वह चलता जा रहा था कि अचानक ठोकर खाकर गिर पड़ा और संदूक भी गिर गया। गिरने से संदूक का ढक्कन खुल गया।

संदूक में से एक सुंदर खरगोश निकल कर भागा। खरगोश के पीछे-पीछे भागता शम्भू



काफी दूर निकल गया। रास्ते में कई तालाब, नाले तथा अन्य बाधाएं आईं। इनके बावजूद शम्भू ने खरगोश का पीछा नहीं छोड़ा।

पीछा करते-करते वह अपने गांव से मीलों दूर पहाड़ी स्थान पर पहुंच गया। पर खरगोश तो रूकने का नाम ही नहीं लेता था!

काफी दूर निकल जाने के बाद शम्भू ने देखा कि खरगोश एक विशालकाय गाय के पास जाकर रूक गया। शम्भू भी उस दिशा में बढ़ा, जिधर गाय खड़ी थी। करीब जाकर उसने देखा कि जिसे वह गाय समझ रहा था, वह गाय नहीं, बल्कि गाय की आकृति की गुफा थी।

गुफा के द्वार पर कांटेदार झाड़ियां उगी हुई थीं, जिससे अंदर जाने का रास्ता बंद था। शम्भू ने बड़ी मेहनत से कुछ झाड़ियां साफ कीं तथा अंदर जाने का रास्ता बनाया। कुछ अंदर जाने पर उसे गुफा में से तरह-तरह की भयंकर आवाजें सुनाई दीं। पर वह डरा नहीं, आगे बढ़ता ही गया।

अंदर पहुंचकर उसने जो देखा उससे उसकी आंखें आश्चर्य से फैली रह गईं। गुफा के अंदर के हिस्से में, जो गाय के पेट की भांति था, सैकड़ों स्वस्थ गायें खड़ी घास चर रही थीं।

शम्भू को उसी क्षण बूढ़ी औरत की गाय के पेट में सैकड़ों गायें नजर आने वाली बात याद आई। उसने हैरानी से चारों तरफ देखा। गुफा के एक कोने में उसे जानी-पहचानी आकृति दिखाई दी। वह समीप गया तो देखा कि यह और कोई नहीं, बल्कि उसकी बूढ़ी अम्मां ही थी।

बूढ़ी अम्मां शम्भू से बोली--''बेटा, आज तुम्हारा साहस, परिश्रम और धैर्य देखकर मुझे यकीन हो गया कि तुम मेरी गायों की देखभाल भली-भांति कर सकोगे। आज से यह सभी गायें तुम्हारी हैं।'' यह कहकर बूढ़ी औरत अदृश्य हो गई। उस दिन से शम्भू गायों की देखभाल करने लगा।

उड़ता राक्षस

एक थी राजकुमारी रूपा। उसको घूमने-फिरने का बहुत शौक था। परंतु उसके पिता अमरसिंह को राजकुमारी का महल से बाहर निकलना पसंद नहीं था। वह हमेशा राजकुमारी पर कड़ी नजर रखते ताकि वह बाहर जाकर अपनी सहेलियां न बनाए। इसीलिए रूपा की कोई सहेली नहीं थी। वह महल में अकेली बैठी-बैठी उकता जाती। महल में खाने-पीने की सब सामग्री थी। मनोरंजन की हर सुविधा थी। फिर भी रूपा का मन वहां नहीं लगता था। वह पर्वतों तथा हरे-भरे मैदानों की सैर करना चाहती थी।

एक दिन वह महल में उदास बैठी कुछ सोच रही थी, तभी उसके दिमाग में एक योजना आई। महल की एक दासी चंद्रा दिखने में हू-ब-हू राजकुमारी जैसी थी। अंतर था तो शाही लिबास का। एक दिन राजकुमारी ने चंद्रा को बुलाया। उसे अपने कपड़े पहनने को कहा। चंद्रा राजकुमारी के कपड़े पहनकर शीशे के सामने खड़ी हुई। अपना रूप देखकर एक क्षण तो वह ठगी-सी रह गई। उन कपड़ों में वह भी राजकुमारी लग रही थी।

इसके बाद राजकुमारी ने दासी चंद्रा के कपड़े पहन लिए। फिर उसने चंद्रा से कहा--''मैं कुछ दिनों के लिए इसी वेश में घूमने-फिरने जा रही हूं। जब तक वापस न आऊं, मेरी जगह तुम ही राजकुमारी बनी रहना। देखो, पिताजी को मेरे बाहर जाने का पता नहीं चलना चाहिए। यदि वह चंद्रा के बारे में पूछें, तो कहना कि वह अपने ननिहाल गई हुई है।'' राजकुमारी की बात सुनकर चंद्रा चिंता में पड़ गई लेकिन मना नहीं कर पाई।

राजकुमारी ने कहा--''तुम मुझे वचन दो कि इस भेद को नहीं खोलोगी।''आखिर चंद्रा ने राजकुमारी को वचन दे दिया।

चंद्रा बनी राजकुमारी महल से चल पड़ी। उसे किसी ने नहीं रोका। बाहर निकलकर राजकुमारी रूपा बहुत खुश हुई। वह चंचल हिरणी की तरह हरे-भरे मैदानों में घूमने लगी। घूमते-घूमते राजकुमारी अपने राज्य की सीमा से बाहर निकल गई। वह एक घने जंगल में पहुंच गई। रात होने लगी थी। वह आराम करना चाहती, लेकिन आराम कहां करे? कुछ दूर और चलने के बाद उसे एक हरा-भरा बाग नजर आया। बाग बहुत ही सुंदर था। पेड़ों पर



मीठे-मीठे फल लगे हुए थे। "मैं यही आराम कर लूंगी।" यह सोचकर राजकुमारी बाग के अंदर चली गई।



राजकुमारी को भूख लग रही थी। उसने एक पेड़ से फल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। तभी एक डरावनी-सी आवाज सुनाई दी--"रुक जाओ।" राजकुमारी डर गई। उसने देखा, आकाश में एक भयानक राक्षस उड़ता हुआ आ रहा है। उसे देखकर राजकुमारी डर के मारे बेहोश हो गई। राक्षस बेहोश राजकुमारी को उठाकर अपने किले में ले गया। वहां उसको एक कमरे में कैद कर दिया।

इधर जब राजकुमारी कई दिनों तक महल में न लौटी, तो राजकुमारी बनी दासी परेशान हो गई। उसने सोचा--"कहीं राजकुमारी किसी मुसीबत में न फंस गई हों!" दासी को रात-दिन यही चिंता सताने लगी। फिर भी वह असली बात किसी

को नहीं बता सकती थी। उसने राजकुमारी को वचन जो दिया हुआ था।

इसी चिंता में दासी चंद्रा बीमार पड़ गई। धीरे-धीरे उसकी बीमारी बढ़ती गई। आखिर एक दिन वह चल बसी। सारी नगरी शोक में डूब गई। राजा पर तो मानो बिजली गिरी हो क्योंकि राजकुमारी रूपा राजा की इकलौती संतान थी। उसकी मां पहले ही मर चुकी थी। बेटी के दुख में राजा पागल-सा हो गया।

उधर राजकुमारी राक्षस के किले से भाग निकलने का उपाय सोचती, मगर सब बेकार। उसी राक्षस के किले में एक राजकुमार भी कैद था। एक दिन जब राक्षस गहरी नींद में सो रहा था, राजकुमारी रूपा ने राजकुमार की मदद से राक्षस को बेहोश कर दिया। फिर एक मोटी रस्सी से कसकर बांध दिया। इसके बाद दोनों तेज भागने वाले घोड़े पर सवार होकर वहां से भाग निकले।

राजकुमारी को राजधानी तक पहुंचाकर राजकुमार अपने राज्य में लौट गया। उस समय रात हो गई थी, इसीलिए राजकुमारी ने महल में जाने की बजाए बाहर रहना ही उचित समझा। वह रात को सोने के लिए एकांत जगह की खोज में निकल पड़ी।

राजकुमारी एक घर के पास से गुजरी, तो उसे कुछ आवाजें सुनाई दीं। एक आदमी दूसरे से कह रहा था--''बेचारा राजा तो बहुत ही दुखी है। इकलौती बेटी रूपा की मृत्यु ने उसे पागल बना दिया है।''

राजकुमारी ने यह बात सुनी तो बहुत दुखी हुई। उसको यह समझते देर न लगी कि चंद्रा की मृत्यु हो गई है। राजकुमारी को रात भर नींद नहीं आई। वह सूरज उगने का इंतजार करने लगी।

सुबह होते ही राजकुमारी महल में गई। दरबार बंद था। राजा अमरसिंह निढाल-सा गद्दी पर बैठा था। अपने पिता की यह हालत देख राजकुमारी की आंखों में आंसू आ गए। राजा ने उसे देखा, तो बोला-- ''अरे चंद्रा! तू कहां चली गई थी? राजकुमारी हम सबको छोड़कर चली गई। तू होती, तो शायद उसे बचा लेती।''

राजकुमारी ने कहा--''पिताजी, मैं चंद्रा नहीं आपकी बेटी हूं। चंद्रा शायद मेरी चिंता में ही चल बसी।'' यह कहकर राजकुमारी ने पूरी घटना बता दी। राजा अमरसिंह अपनी पुत्री को गले लगाना चाहता था, तभी मंत्री बोला--''महाराज, हो सकता है यह लड़की चंद्रा ही हो। राजकुमारी की हमशक्ल होने का फायदा उठाना चाहती हो। हमें इस पर फौरन विश्वास नहीं करना चाहिए ।''

फिर मंत्री ने रूपा की तरफ मुड़कर कहा-- ''तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुम राजकुमारी रूपा ही हो?''

मंत्री की बात सुनकर राजकुमारी भौचक्की रह गई। उस समय वह दासी के वेश में थी।

तभी राजकुमारी को अपनी हीरे की अंगूठी का ध्यान आया। उस पर उसका नाम खुदा था। वह अंगूठी उसके जन्मदिन पर राजा ने भेंट दी थी। उसने वही अंगूठी मंत्री को दिखाई। अंगूठी देखकर मंत्री को विश्वास हो गया, यही असली राजकुमारी है।

बिछुड़ी बेटी को पाकर राजा की आंखों से आंसू निकल पड़े। उसने रूपा को गले लगा लिया। राजकुमारी के वापस आने की खबर सुनकर सारे राज्य में खुशी की लहर दौड़ गई।

छू-छू राजा

एक था राजा। उसकी दो बेटियां थीं--चंद्रकांता और सूर्यकांता। दोनों ही बदसूरत और मूर्ख थीं।

दोनों विवाह योग्य हुईं, तो राजा ने उनके लिए वर ढूंढ़ने शुरू कर दिए। राजकुमारियों की मूर्खता के चर्चे दूर-दूर तक फैल चुके थे। जिससे भी राजा बात करता, वे रिश्ते के लिए मना कर देते। रात-दिन इसी चिंता में घुलकर राजा बीमार हो गया।

एक रात राजा अपने बिस्तर पर लेटा हुआ इसी विषय में सोच रहा था कि उसके पास एक बूढ़ा व्यक्ति आया। बोला--''राजन, किस सोच में डूबे हो?''

राजा उठकर बैठ गया। बोला--''मेरी दो बेटियां विवाह योग्य हो गई हैं, पर वे बड़ी ही मूर्ख और बदसूरत हैं। उनसे कोई विवाह करना ही नहीं चाहता। मुझे उन्हीं की चिंता है।''

बूढ़ा बोला--''उनको मैं पलक झपकते ही बुद्धिमती एवं सुंदर बना सकता हूं पर इसके बदले तुम्हें एक वायदा करना होगा।''

राजा तो यही चाहता था। तुरंत तैयार हो गया। बूढ़ा बोला--''सुनो, मैं आज ही अपना काम कर दूंगा। पर आज से ठीक दस दिन बाद जब तुम सुबह सोकर उठोगे और जिस चीज को सबसे पहले हाथ लगाओगे, वह मुझे देनी होगी।''

राजा ने सोचा--'इसमें कौन-सी बड़ी बात है। मैं किसी भी छोटी-मोटी चीज को छूकर इसे दे दूंगा।' बोला--''ठीक है, तुम अपना काम करो।''

राजा के ''हां'' कहते ही बूढ़ा वहां से गायब हो गया। कुछ देर बाद राजा को नींद आ गई।

सुबह जब राजा सोकर उठा, तो उसने देखा--''दोनों राजकुमारियों का तो मानो रूप ही बदल गया था। वे दोनों ही अति सुंदर दिखाई दे रही थीं। जिस ढंग से वे आपस में बातचीत कर रही थीं, उससे लगता था कि दोनों बुद्धिमती व सभ्य हो गई हैं।

राजा खुशी से झूम उठा। बातों ही बातों में दिन बीतते गए। दसवां दिन आया। राजा को अपना वायदा याद था। अगले दिन राजा सोकर उठा। अभी उसने अपनी आंखें मली ही


P.SEN

थीं कि वही बूढ़ा आ टपका।

उसने राजा से कहा--''राजन, मैंने अपना वायदा पूरा कर दिया था। आज तुम अपना वायदा पूरा करो। अपनी आंखें मुझे दे दो। तुमने सबसे पहले इनको ही छुआ है।''

सुनकर राजा भौचक्का रह गया।--''नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। हे भगवान, यह मैंने क्या किया!''

फिर उसने बूढ़े से गिड़गिड़ाकर कहा--''तुम मुझसे और कुछ भी मांग लो, पर आंखें तो मैं नहीं दे सकता। आंखों के बिना तो दुनिया में कुछ भी नहीं है।''

बुढ़ा मुस्कराकर बोला--''राजन, चलो, मैं तुम्हें एक मौका और देता हूं। मैं इस कमरे में चारों ओर चक्कर लगाऊंगा। यदि तुम किसी तरह भी मुझे छू दोगे, तो मैं यहां से चुपचाप चला जाऊंगा।'' यह कहकर वह बूढ़ा उड़न तश्तरी की भांति कमरे में घूमने लगा। राजा ने उसे पकड़ने की बहुत कोशिश की। कई नौकरों को भी इस काम में लगाया। पर कोई भी बूढ़े को पकड़ न सका।

दोनों राजकुमारियां भी तब तक वहां आ पहुंची थीं। जब उन्होंने देखा कि वह बूढ़ा किसी भी तरह पकड़ में नहीं आ रहा है, तो वे सोच-विचार करने लगीं। अचानक उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंने रस्सी के फंदे बनाए और बूढ़े की ओर उछालने शुरू कर दिए। एक-दो बार तो बूढ़ा इन फंदों से बच निकला, पर आखिर वह फंस ही गया। राजा ने उसे छू दिया। फिर बोला--''मैंने तुम्हारी शर्त पूरी कर दी।''

बूढ़ा हंसकर बोला--''राजन, यह सब नाटक तो मैंने इन राजकुमारियों की परीक्षा लेने के लिए किया था। ये दोनों इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई हैं। अब तुम इन दोनों का विवाह करके सुखी रहो, यही मेरी इच्छा है।'' यह कहकर वह बूढ़ा वहां से चला गया।

राजा ने मन ही मन उस बूढ़े को धन्यवाद दिया।

कला की परख

किसी नगर में एक चित्रकार रहता था। ब्रश व रंगों की सहायता से वह तरह-तरह के चित्र बनाता था। उसके चित्र इतने सुंदर और सजीव होते कि देखते ही बनते थे। पर अफसोस की बात थी, नगर में उसकी कला की कोई कद्र नहीं करता था। चित्रकार के बनाए हुए चित्र लोग बहुत सस्ते मूल्य पर भी खरीदने को तैयार नहीं होते थे। इसी कारण चित्रकार को रोटियों के लाले पड़े रहते थे।

चित्रकार ने सोचा--'ऐसी कला से क्या लाभ, जो पेट भरने के लिए रोटी भी न दे सके! अब मैं चित्र बनाना छोड़कर कोई छोटा-मोटा व्यापार या नौकरी ही कर लूंगा। कम-से-कम दो वक्त की रोटी तो ठीक से नसीब होगी।' यह निश्चय करके वह सो गया। उस रात भी उसने कुछ नहीं खाया।

देवदूतों ने स्वर्ग में जाकर कला की देवी को चित्रकार की हालत बताई और उसका निश्चय भी सुनाया। देवी सोचने लगी--'अगर ऐसा ही होता रहा, तो धीरे-धीरे दुनिया के सभी कलाकर अपनी कला छोड़कर व्यापार करने लगेंगे। इस तरह दुनिया से कला खत्म ही हो जाएगी। कला नहीं रहेगी, तो मुझे भी कौन पूजेगा! कुछ करना चाहिए।'

सुबह हुई। हालांकि रात को चित्रकार ने निश्चय किया था कि वह कोई चित्र नहीं बनाएगा, फिर भी सुबह उठकर उसने एक चित्र बनाना शुरू किया। करीब एक घंटे बाद चित्र पूरा कर लिया। चित्र में एक सुंदर मोर अपने पंख फैलाकर नाच रहा था। यह चित्र अब तक बनाए सभी चित्रों से अधिक सुंदर था।

इस चित्र को अवश्य ही कोई खरीद लेगा, यह सोचकर चित्रकार अपने घर से निकल पड़ा। घूमते-घूमते शाम हो गई, पर चित्र न बिका। भूख के मारे उसका बुरा हाल था। चलते-चलते वह थक भी गया था। मारे भूख और थकान के वह एक दुकान के आगे गिरकर बेहोश हो गया।

दुकानदार ने उसे उठाया। दुकान के अंदर ले गया। थोड़ी देर बाद जब चित्रकार को होश आया, तो वह जाने लगा। दुकानदार ने पूछा--"भाई, तुम्हारी यह हालत कैसे हुई?"



चित्रकार ने सारी बता दी। दुकानदार को उस पर तरस आ गया। उसने तस्वीर खरीद ली।

तस्वीर उसने अपनी दुकान में रख दी। अगले दिन सुबह जब उसने दुकान खोली, तो वो हैरान हो गया चित्र के पास एक सोने का मोर पंख पड़ा हुआ था। वह बड़ा खुश हुआ। अगले दिन उसे चित्र के पास फिर वैसा ही पंख मिला। उसने सोचा--'जरूर यह पंख तस्वीर में से ही गिरता है। शायद चित्रकार कोई जादूगर है। अगर मेरे पास ऐसी दस तस्वीरें हों, तो रोज मुझे सोने के दस पंख मिल जाएं। ऐसा हुआ, तो मैं शीघ्र ही बेहद धनी बन जाऊंगा। मुझे उस चित्रकार की तलाश करनी चाहिए।'

यह सोचकर दुकानदार तुरंत चित्रकार की तलाश में निकल पड़ा। काफी तलाश करने के बाद उसे चित्रकार मिल गया। उसने चित्रकार से कहा--''भैया, मुझे तुम्हारा वह चित्र बहुत पसंद आया । तुम मुझे शीघ्र ही वैसे दस चित्र और बना दो। मैं तुम्हें मुंहमांगा दाम दूंगा।'' यह सुनकर चित्रकार को तो जैसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। आज पहली बार उससे कोई चित्र खरीदने आया था। उसने कहा--''ठीक है, आपको कल चित्र मिल जाएंगे।''

अगले दिन दुकानदार को चित्र मिल गए। उसने वे चित्र भी अपनी दुकान में रख दिए। वह बेसब्री से सुबह होने की इंतजार करने लगा।

सारी रात उसने करवटें बदल-बदलकर काटी। वह हिसाब लगाता रहा कि दस-ग्यारह पंख रोज के हिसाब से मिलने पर एक हफ्ते में, फिर एक महीने में उसके पास कितने पंख इकट्ठे हो जाएंगे?

सुबह होने पर वह जल्दी-जल्दी नहा-धोकर दुकान पर पहुंचा। दुकान खोली। आश्चर्य और दुख से उसका मुंह खुला ही रह गया। उसने देखा, आज किसी भी तस्वीर के पास पंख नहीं है। उसने तिजोरी खोली, तो हाथ के तोते उड़ गए। पहले वाले पंख भी गायब हो गए। यह क्या हुआ! वह गुस्से में चित्रकार को कोसने लगा। अब इन चित्रों का उसके लिए कोई मूल्य नहीं था । उसने सभी चित्र उठाकर दुकान से बाहर फेंक दिए और सिर पकड़कर बैठ गया।

थोड़ी ही देर बाद दुकान के पास से एक घुड़सवार गुजरा। उसने चित्र पड़े हुए देखे, तो उसके मुंह से निकला--"वाह, कितने सुंदर चित्र हैं।" वह सभी चित्र अपने साथ उठाकर ले गया।

वह घुड़सवार कोई और नहीं, उस नगर का राजा था। इस समय वह वेश बदलकर घूम रहा था। राजमहल पहुंचकर राजा ने यह घोषणा करवा दी –"जिस किसी चित्रकार ने ये चित्र बनाए हैं, वह शीघ्र आकर उससे मिले।"

चित्रकार ने भी घोषणा सुनी। वह राजा से मिलने गया। राजा ने कहा "मुझे मालूम नहीं था, मेरे राज्य में इतने महान कलाकर भी रहते हैं। मैं आज से तुम्हें अपने दरबार का चित्रकार नियुक्त करता हूं।"

चित्रकार की खुशी का ठिकाना न था। वह प्रसन्न मन घर लौट आया। अब उसे गड़ अहसास हो रहा था कि कला अनमोल है। चाहे देर से ही क्यों न हो, कला की कद्र होती ही है।

पानी पिलाओ

एक था राजा। उसे शिकार खेलने का बहुत ही शौक था। वह अक्सर दूर-दूर जंगलों में शिकार खेलने जाया करता था।

एक दिन वह शिकार खेलते-खेलते जंगल में निकल गया। गर्मी का मौसम था। उसे जोरों की प्यास लग आई थी। काफी भटकने के बाद उसे साफ पानी का एक तालाब नजर आया। तालाब देखकर राजा बहुत खुश हुआ। वह अपने घोड़े से उतरकर तालाब की ओर बढ़ा। अभी वह तालाब से पानी पीने ही लगा था, उसे एक आवाज सुनाई दी- ''राजन, मैं बहुत प्यासी हूं। पहले मुझे पानी पिला दो, तुम्हारा बहुत उपकार होगा।''

आवाज सुनकर राजा ने अपना सिर उठाया । उसने देखा- ''तालाब के बीचोंबीच एक जलपरी खड़ी थी। वह बहुत ही करुणामयी दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी।'' देखकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उसके समीप गया । उसे अपने हाथों से पानी पिलाने लगा। थोड़ी ही देर में उसकी प्यास बुझ गई। वह बहुत प्रसन्न दिखाई देने लगी, इसके बाद परी राजा का हाथ पकड़कर तालाब के बाहर निकल आई। तालाब से बाहर निकलते ही वह जलपरी से एक सामान्य स्त्री के रूप में बदल गई। राजा यह देखकर आश्चर्यचकित था। पूछा- ''देवी, आप कौन हैं? मुझे यह रहस्य समझ नहीं आ रहा है कि तालाब में रहकर भी आप प्यासी हैं?''

वह बोली- ''मैं बताना तो नहीं चाहती परंतु यदि आप पूछना चाहते हैं, तो सुनिए- इसके पीछे एक लंबी कहानी है। मैं पिछले जन्म में एक गांव में रहती थी। मैं उस गांव के जमींदार की पत्नी थी।

एक बार उस गांव में तथा आसपास के गांवों में सूखा पड़ा। सभी नदी-नाले और तालाब सूख गए। सिर्फ मेरे घर के कुएं का पानी नहीं सूखा। गांव के सभी लोग मुझसे पानी मांगने आते, परंतु मैं सभी को मना कर देती।

एक दिन की बात है, मैं कुएं के किनारे लगे पेड़ के नीचे बैठी थी । तभी एक स्त्री अपने बीमार व प्यासे पति को लेकर आई । बोली- ''बहिन, कृपया मेरे पति को दो घूंट



पानी पिला दो।

उस बीमार को देखकर भी मुझे दया नहीं आई। मैंने उस स्त्री को दुत्कार कर वहीं से भगा दिया। थोड़ी देर में ही उसका पति प्यास से तड़प-तड़पकर मर गया। यह देखकर उस स्त्री को बहुत क्रोध आया। उसने मुझसे कहा– "तुम बहुत निर्दयी तथा स्वार्थी हो। तुम्हारे पास इतना पानी होते हुए भी तुमने कभी किसी को पानी नहीं पिलाया। पानी के होते हुए भी तुमने सबको प्यासा रखा है। मरने के बाद तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी। तुम जल में ही निवास करोगी, परंतु जल में रहकर भी प्यासी रहोगी।"

श्राप सुनकर मैंने उस स्त्री के पैर पकड़ लिए। कहा– "देवी, मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई है। आप अपना श्राप वापस ले लीजिए।"

यह सुनकर उस स्त्री को मुझ पर दया आई। वह बोली– "मेरा श्राप तो सच्चा ही होगा। परंतु मैं तुम्हें तुम्हारे उद्धार का उपाय बताती हूं। तुम जलपरी बनकर जल में निवास करोगी, जिस दिन कोई प्यासा व्यक्ति अपनी प्यास बुझाने से पहले तुम्हारी प्यास बुझाएगा, उसी दिन तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी।"

उस दिन के बाद मैंने अपने जीवन के शेष दिन कष्ट में बिताए। कुछ ही दिनों में मेरी मृत्यु हो गई। मृत्यु के उपरांत मैं जलपरी बनकर इस तालाब में निवास करने लगी, परंतु इसका पानी कभी नहीं पी सकी। मैं आते-जाते मुसाफिरों से कहती– ''मुझे पानी पिलाओ।'' पर वे स्वयं जल पीकर चले जाते। यह कहकर वह स्त्री वहां से चली गई।

राजा अपने महल में लौट आया। महल में आते ही उसे अपनी रानी के स्वस्थ होने की खबर मिली। उसकी रानी बहुत बीमार थी, राजा उसके जीवन की आशा छोड़ चुका था। रानी को स्वस्थ देखकर राजा समझ गया कि यह चमत्कार उस स्त्री पर किए उपकार के कारण हुआ है।

पुराना किला

कृष्ण नगर का राजा था हंसदेव। बड़ा ही हंसमुख और प्रजा का दुलारा। एक बार वह अकेला जंगल में शिकार खेलने गया। शाम तक नहीं लौटा, तो राजघराने में चिंता हो गई। सेनापति सैनिकों को ले राजा को खोजने निकला। सारा जंगल छान मारा। मगर राजा हंसदेव का कुछ पता न चल सका।

निराश सेनापति महल में पहुंचा, तो यह बात सारे राज्य में फैल गई। हाहाकार मच गया। सारी प्रजा हंसदेव से खुश थी । उसे बहुत चाहती थी । सभी सोच रहे थे, आखिर राजा गए कहां?

हंसदेव का एक ही बेटा था--चंद्रप्रकाश। वह बहुत बुद्धिमान और बहादुर था। उसने अपने पिता की खोज में जमीन-आसमान एक कर दिए। जंगल की सीमा से पार, दूसरे राज्य की सीमा में भी वह गया। किंतु वहां से भी राजा के बारे में कोई सूचना नहीं मिली।

निराश होकर वह लौट ही रहा था, अचानक रास्ते में उसने किसी घोड़े के जोर से हिनहिनाने की आवाज सुनी। वह उसी दिशा में चल दिया, जिधर से वह आवाज आ रही थी। कुछ ही दूरी पर उसे अपने पिता का घोड़ा जमीन पर गिरा दिखाई दिया। वह बुरी तरह से घायल था। घोड़े ने मुंदी-मुंदी आंखों से राजकुमार को देखा। फिर अपना सिर पूर्व दिशा की ओर घुमाकर जोर से हिनहिनाया। हिनहिनाते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

राजकुमार चंद्रप्रकाश को लगा, जैसे घोड़ा कुछ कहना चाहता था! उसने एक बार पूर्व दिशा की ओर देखा । उधर भयानक जंगल मुंह बाएं खड़ा था। चंद्रप्रकाश ने न जाने क्या सोचा, अपने घोड़े का मुंह उधर ही फेर दिया।

जंगल की वह पट्टी बड़ी सघन थी। राजकुमार बेहद सावधानी से रास्ता बनाता आगे बढ़ता रहा। कहीं भी उसे कुछ ऐसा न मिला, जिससे उसके पिता के गायब हो जाने का सूत्र मिलता। यहां तक कि जंगल समाप्त हो गया। अब वह कृष्ण नगर की सीमा के बाहर पहुंच गया था। वहां से उनके शत्रु राजा भीमदेव के राज्य अमरपुर की सीमा शुरू होती थी।



अचानक चंद्रप्रकाश की दृष्टि धूल में पड़ी किसी चमकीली वस्तु पर पड़ी। उत्सुकतावश उसे उठाया, तो चौंक पड़ा। वह उसके पिता हंसदेव की राजकीय मुद्रा थी। उसे वहां पड़ा देख कुशाग्र बुद्धि राजकुमार को भांपते देर न लगी कि उसके पिता शिकार खेलते-खेलते अमरपुर की सीमा में चले गए होंगे। वहां वह दुश्मनों के हाथ पड़ गए होंगे। मन ही मन कुछ सोचकर वह वापस अपने महल में लौट आया।

अगले दिन उसने राज्य के दो श्रेष्ठ गुप्तचरों को बुलाया। उनसे अपने मन की शंका बताकर कहा--"वेश बदल कर अमरपुर जाओ। पता करो, मेरे पिता वहां पहुंचे अथवा नहीं। यदि पहुंचे हैं, तो कहां हैं?"

दोनों गुप्तचर फेरीवालों के वेश में अमरपुर जा पहुंचे। गली-गली में सामान बेचने के

बहाने राजा हंसदेव के बारे में पता लगाने लगे।

एक दिन वे किले के पास सामान बेच रहे थे कि उन्होंने सुना, वहां तैनात एक बूढ़ा सैनिक दूसरे से कह रहा था--''हंसदेव अपने को बड़ा वीर समझता था। मैंने उस पर जाल फेंका, तो ऐसा बन गया जैसे चूहा। अब सड़ रहा है पुराने किले की काल कोठरी में। चींटी तक नहीं पहुंच सकती वहां।''

सुनते ही दोनों गुप्तचरों के कान खड़े हो गए। उसी समय अमरपुर छोड़ दिया। सीधे कृष्ण नगर पहुंचे। राजकुमार चंद्रप्रकाश को सारी बात बताई तो वह भी सोच में पड़ गया। राजा हंसदेव को शत्रु के पंजे से छुड़ा लाना टेढ़ी खीर थी।

भीमदेव अत्यंत शक्तिशाली था । उसके पास काफी बड़ी सेना थी। फिर उस पर सीधे आक्रमण भी नहीं किया जा सकता था । ऐसी दशा में वह राजा हंसदेव की हत्या भी करा सकता था । बड़ी परेशानी थी । चंद्रप्रकाश कई रातों तक सोचता रहा कि इस बारे में क्या करे?

इन दिनों वह इतना परेशान रहा कि उसने किसी से भी मिलना छोड़ दिया। प्रहरियों को सख्त ताकीद कर दी, उसके पास न किसी को भेजें और न ही उसे पुकारें।

उधर अमरपुर का राजा भीमदेव बड़ा प्रसन्न था। धीरे-धीरे कृष्ण नगर पर आक्रमण करने की योजना भी बना रहा था। वह रोज पुराने किले की रक्षा व्यवस्था देखने भी जाया करता था कि कहीं राजा हंसदेव भाग न जाएं।

एक दिन वह अपने सेनापति के साथ पुराने किले की ओर जा रहा था। मार्ग में उसने एक युवा साधु को एक पेड़ के नीचे तपस्या करते देखा। पूछताछ की तो पता चला, वह साधु कुछ दिन पहले ही आया है। दिन भर पेड़ के नीचे बैठा हवन करता है। रात को अपनी कुटिया में सो जाता है। अमरपुर के निवासी सैकड़ों की संख्या में रोज उस साधु के दर्शन करने आते हैं। भेंट लाते हैं मगर साधु उसे गरीबों में बांट देता है; अपने लिए कुछ नहीं रखता। यह सुनकर भीमदेव आगे बढ़ गया।

पंद्रह दिन ऐसे ही बीत गए। सोलहवें दिन सुबह होते ही जब पहरेदार सिपाहियों ने पुराने किले के तहखाने का दरवाजा खोला, तो भौचक्के रह गए। राजा हंसदेव तहखाने से गायब थे। न कोई ताला टूटा, न कोई सिपाही घायल हुआ, न कोई युद्ध हुआ। आखिर राजा हंसदेव भागे कैसे? पहरेदारों ने तुरंत राजा भीमदेव को हंसदेव के गायब होने की खबर दी।

राजा भीमदेव स्वयं तहखाने में गया। चारों तरफ देखा, कहीं दरार तक दिखाई नहीं दी। वह बेचैनी से तहखाने में इधर-उधर टहलने लगा। तहखाने का फर्श कच्चा था। टहलते-टहलते अचानक एक स्थान पर राजा भीमदेव गिरते-गिरते बचा। वहां की मिट्टी पोली थी। राजा एकदम घुटनों तक नीचे धंस गया। तहखाने के फर्श पर उस जगह पोली मिट्टी से भरा गड्ढा था। गड्ढे से मिट्टी निकाली गई तो वहां एक अंधेरी सुरंग दिखाई दी।

भीमदेव अपने सैनिकों सहित सुरंग में घुसा। करीब घंटा भर चलने के बाद उन्हें रोशनी दिखाई दी। रोशनी सुरंग के दूसरे सिरे से आ रही थी। राजा और उसके सैनिक सुरंग से बाहर निकले। यह देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा; सुरंग का दूसरा सिरा उस साधु की कुटिया में निकलता था, जो कुछ दिन पहले उनके राज्य में आया था।

राजा समझ गया कि राजकुमार चंद्रप्रकाश ही साधु के वेश में आया था। सुरंग खुदवाकर अपने पिता राजा हंसदेव को तहखाने से निकाल ले गया । वह राजकुमार की बुद्धिमता और बहादुरी की बहुत-सी कहानियां तो पहले ही सुन चुका था । इस बार उसने एक विचित्र निर्णय लिया।

मंत्री से बोला--''मंत्री जी, हम ऐसे बुद्धिमान पड़ोसियों को उजाड़ना नहीं चाहते। आप आज ही हंसदेव के पास संधि का प्रस्ताव भेज दें। साथ ही मेरा यह निवेदन भी भिजवा दें कि मैं अपनी इकलौती बेटी को उनकी पुत्रवधू बनाना चाहता हूं।''

राजा हंसदेव ने इस प्रस्ताव को खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया।

सनकी राजा

सोनपुर में राजा विचित्रसिंह राज्य करता था। विचित्रसिंह बहुत ही बुद्धिमान और वीर था, परंतु कुछ सनकी भी था।

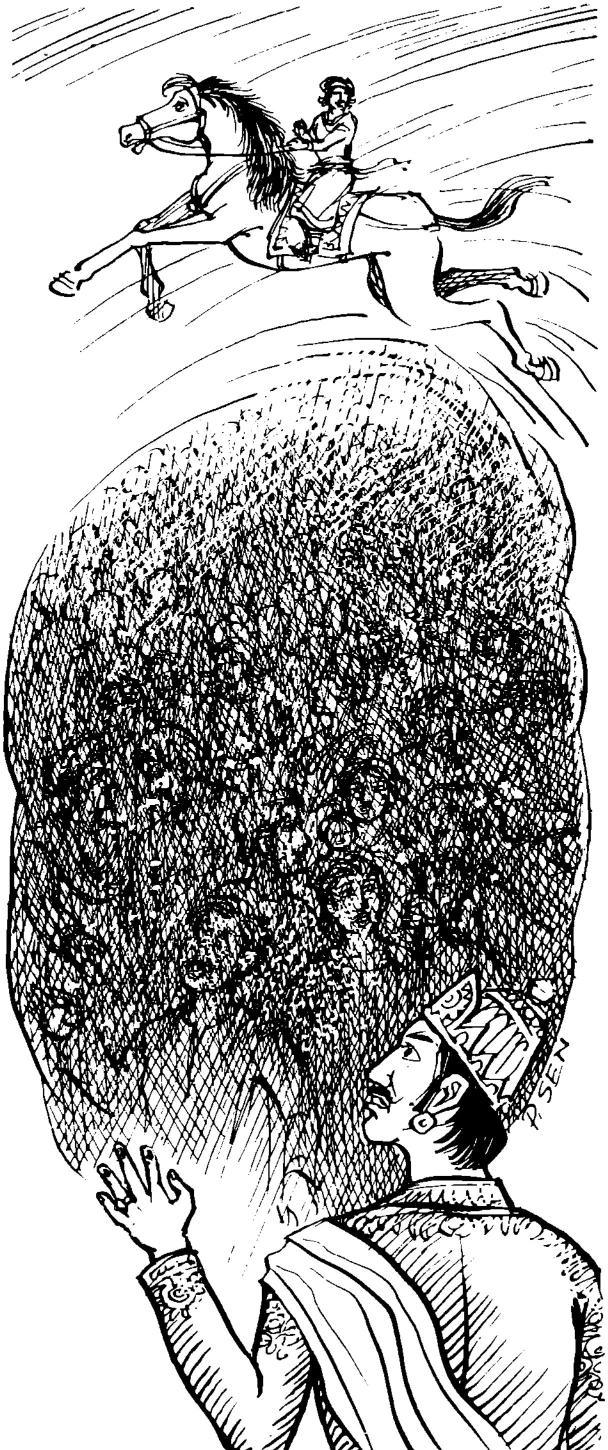
सोनपुर राज्य की पूर्वी सीमा पर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां थीं। एक बार की बात है- पहाड़ियों की खुदाई करते समय कुछ सोने की खानों का पता चला तो वह बहुत खुश हुआ। उसने मंत्रियों को आज्ञा दी- ''राज्य के सभी मजदूरों को राज्य की पूर्वी सीमा पर भेज दो।''

राजा की आज्ञानुसार राज्य के सभी मजदूर सोने की खानों में काम करने के लिए भेज दिए गए। मजदूर दिन-रात खानों में काम करते तथा सोना निकालकर राजा के पास भिजवा देते। इधर ज्यों-ज्यों राजा के पास सोना बढ़ता गया, त्यों-त्यों उसका लालच भी बढ़ता गया। एक दिन उसने सोचा- 'क्यों न मैं राज्य के अन्य युवकों को भी इसी काम में लगा दूं। जितने ज्यादा लोग काम करेंगे उतना ही अधिक सोना मिलेगा और मैं कुछ ही दिनों में संसार का सबसे अमीर राजा बन जाऊंगा।' सो उसने देश के सभी युवकों को इसी काम में लगा दिया।

राजा का एक मंत्री था- चतुरसिंह, बहुत ही बुद्धिमान व समझदार। उसे राजा की बात समझ नहीं आई। उसने राजा को कहा- ''महाराज, राज्य के सभी युवकों को इसी काम में लगा देना उचित नहीं है। राज्य की अन्य जरूरतें भी हैं, वह कैसे पूरी होंगी?'' परंतु राजा पर तो इस समय सोना इकट्ठा करने की सनक सवार थी। उसने मंत्री की एक न सुनी।

इधर बुवाई का समय पास आता जा रहा था परंतु अभी तक न तो खेतों में हल ही चला था न अन्य कोई व्यवस्था ही थी। सभी किसान तो खानों में काम कर रहे थे। कौन करता यह काम! फलस्वरूप इस बार खेतों में बुवाई नहीं हुई। फसल न होने के कारण पिछले साल के बचे-खुचे अनाज से काम चलाया गया। इसी प्रकार कुछ समय बीत गया। मंत्री ने फिर राजा से कहा- ''महाराज, बुवाई का समय फिर नजदीक आता जा रहा है। पिछली बार की तरह फिर समय न निकल जाए। आप कम-से-कम किसानों को तो वापस बुलवा ही लीजिए वरना जनता भूखों मर जाएगी।'' परंतु राजा न माना। उल्टा वह मंत्री की बात पर क्रोधित हो गया। मंत्री बेचारा चिंता में पड़ गया।

एक दिन की बात है इसी उधेड़बुन में डूबा हुआ मंत्री दक्षिण दिशा की ओर जा रहा



था। चलते-चलते वह दूर पहाड़ियों के समीप पहुंच गया। वहां उसे एक बूढ़ा आदमी मिला, जिसके पास एक घोड़ा था। उसने मंत्री से उसके दुख का कारण पूछा। मंत्री के बताने पर उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा- ''मेरे पास यह घोड़ा है, इसे तुम ले लो। जब तुम्हें किसी मुसीबत का सामना करना पड़े तो कहना-ओ सफेद घोड़े मेरी मदद करो।'' यह कहकर बूढ़ा व्यक्ति गायब हो गया।

मंत्री ने देखा उसकी बगल में एक स्वस्थ सफेद घोड़ा अभी भी हिनहिना रहा है। मंत्री ने सोचा- 'अगर यह घोड़ा सोने की खानों पर काम करने वालों को वहां से भगाने में मेरी मदद करे, तो कितना अच्छा हो।' यह सोचकर उसने सफेद घोड़े की और देखा। कहा- ''सफ़ेद घोड़े, मेरी मदद करो।''

यह सुनकर घोड़ा हिनहिनाया और घुटने मोड़ कर बैठ गया। मंत्री उस पर सवार हो गया। मंत्री को लेकर घोड़ा हवा की गति से पूर्वी पहाड़ियों की ओर चल पड़ा, जहां सोने की खानें थी। घोड़ा इतनी तेजी से दौड़ रहा था कि वह जिधर भी जाता, तेज आंधी चलने लग जाती। खूब मिट्टी उड़ने लगी, जिससे सभी काम करने वालों के आंख, नाक,

कान व मुंह मिट्टी से भर गए।

जब आंधी ने रूकने का नाम ही नहीं लिया तो वे परेशान होकर राज्य की ओर भागने लगे। जब सभी लोग वहां से काम छोड़कर भागने लगे तो चतुरसिंह भी राज्य की ओर चल पड़ा। उसने घोड़ा अपने घर में बांध दिया और आराम से सो गया।

उधर जब राजा के पास यह खबर पहुंची तो वह आगबबूला हो उठा। उसने पूछा- ''कौन है जिसने यह सब करने की हिम्मत की है।'' सबने चतुरसिंह को घोड़े पर बैठे हुए देख लिया था, सो उन्होंने चतुरसिंह का नाम बता दिया। राजा तो चतुरसिंह पर पहले से ही नाराज था इसलिए उसने अपने सिपाहियों को तुरंत आज्ञा दी कि चतुरसिंह को पकड़ लाओ।

जब सिपाही चतुरसिंह को पकड़ लाए तो राजा ने पूछा- ''क्या तुम अपना अपराध मानते हो?'' इस पर चतुरसिंह बोला- ''हां महाराज, यह सब मैंने ही किया है परंतु इसी में हमारी भलाई है।'' तब राजा ने कहा- ''मैं तुम्हें इस अपराध की सजा दूंगा। उससे पहले अपनी कोई इच्छा पूरी करना चाहते हो, तो कर लो।''

चतुरसिंह राजा की यह बात सुनकर बड़ा दुखी हुआ। उसने राजा से कहा- ''महाराज, मेरा एक घोड़ा है जिसे मैं बहुत प्यार करता हूं। मरने से पहले मैं उस पर सवारी करना चाहता हूं। राजा ने आज्ञा दे दी। राजा की आज्ञा पाकर चतुरसिंह घोड़े पर सवार हुआ। उसने धीरे से घोड़े के कान में कहा- ''ओ सफेद घोड़े, मेरी मदद करो।'' यह सुनते ही सफेद घोड़ा चतुरसिंह को लेकर उड़ चला। राजा और सभी लोग देखते ही रह गए।

घोड़े के वहां से उड़ते ही सोनपुर में चारों ओर अंधकार-सा छा गया। अंधेरे में ही राजा ने देखा कि उसके राज्य के सभी लोग भूख से व्याकुल हैं। चारों और सिर्फ सोना ही सोना बिखरा पड़ा है। वह तथा उसका परिवार भी भूख से व्याकुल हैं।

यह सब देखकर राजा की आंखें खुल गई। उसने अपने सिपाहियों से कहा- ''चतुरसिंह जहां भी हो, उसे ढूंढकर लाओ और मेरा संदेश दो कि राजा को तुम्हारी बहुत जरूरत है। तुम्हारी बात न मानकर राजा ने जो भूल की, उसका उसे बहुत पछतावा है।''

कुछ ही दिनों में सिपाही चतुरसिंह सहित सोनपुर में आए। राजा ने चतुरसिंह को सम्मानपूर्वक अपने पास बैठाया तथा उसे मुख्य सलाहकार बना लिया। अब राजा ने खेती तथा राष्ट्रहित की ओर सारा ध्यान लगा दिया। एक वर्ष उपरांत उसके राज्य में फिर समृद्धि लौट आई।

बारह साल बाद

सोहना नदी के किनारे एक छोटा-सा गांव था सोहनपुर। इस गांव से थोड़ी ही दूर किसी बहुत पुराने मंदिर के खंडहर थे। वहां कोई जाकर पूजा-पाठ नहीं करता था। उस मंदिर के पास वृक्षों का झुरमुट था। गांव के बच्चे वहां खेलने जाया करते थे।

गांव में गंगू नाम का एक अधेड़ किसान रहता था। गंगू की पत्नी अपने इकलौते बेटे को जन्म देते समय स्वर्ग सिधार गई थी। बेटे का नाम था सोनू। गंगू ने सोनू को मां की तरह पाला-पोसा था। वह सोनू को बहुत प्यार करता था।

सोनू बहुत ही प्यारा तथा नटखट बच्चा था। अपनी शरारतों से उसने गंगू की नाक में दम कर रखा था। कई बार वह खेलते-खेलते इधर-उधर छिप जाता था। बेचारा गंगू बड़ी मुश्किल से उसे खोज पाता।

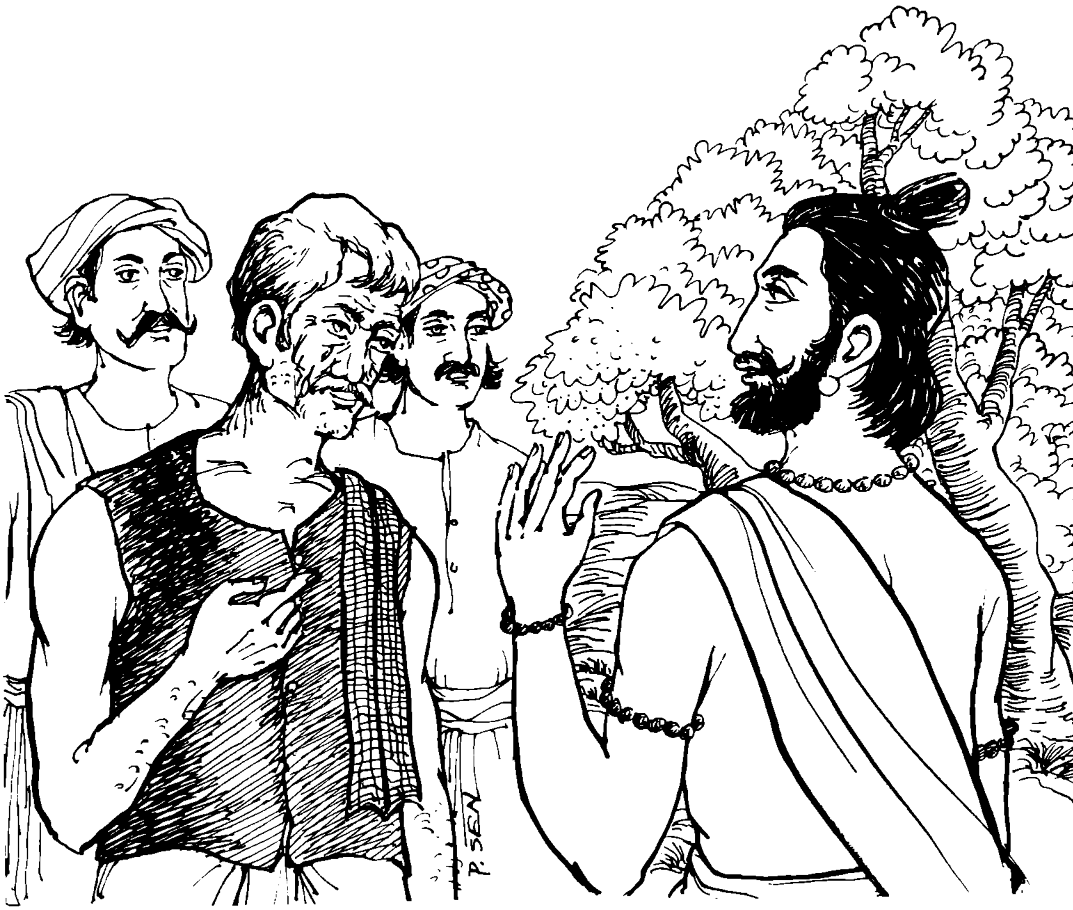
एक दिन की बात है, तब सोनू आठ वर्ष का हो चुका था। शाम का वक्त था। उस दिन सोनू अपने साथियों के साथ खेलने मंदिर के खंडहरों में पहुंचा। देर तक सब बच्चे आंख-मिचौनी खेलते रहे। अंधेरा घिरने पर वे लौटने लगे, तो सोनू न मिला।

बच्चों ने गांव में आकर गंगू को खबर दी। वह तुरंत लालटेन लेकर मंदिर के खंडहरों में आया। गांव वाले भी गए। सबने बहुत खोज की, किंतु सोनू न मिला।

सब सोचने लगे--'सोनू गया तो कहां?' गंगू ने सोचा- 'शायद वह गांव में आकर कहीं छिप गया होगा।' परंतु उस रात सोनू घर न लौटा। गंगू घबरा गया। उसने सारा गांव छान मारा। मगर सोनू का कहीं पता न चला। निराश होकर उसने सोनू की तलाश बंद कर दी।

इस घटना को बीते करीब बारह साल गुजर गए। इस बीच सोहनपुर का नक्शा बदल गया। कुछ वर्ष पहले सोहना नदी में बाढ़ आने से करीब आधा गांव बाढ़ की चपेट में आ गया था। घर उजड़ गए तथा परिवार इधर-उधर बिखर गए। गांव को उस जगह से हटाकर दूसरी जगह बसाया गया।

एक दिन सोहनपुर में एक तेजस्वी युवा महात्मा आए। उम्र होगी बीस वर्ष। उनको ज्योतिष तथा अन्य शास्त्रों का अद्‌भुत ज्ञान था। हाथों की रेखाएं पढ़कर भूत-भविष्य की बातें बताते



थे। बातें भी बिल्कुल सही।

शीघ्र ही उनकी ख्याति फैल गई। लोग दर्शनों को आने लगे। सारा सोहनपुर उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ा। सैकड़ों की संख्या में दूर-दूर से भी लोग उनके पास आने लगे। महात्मा प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा ऐसे ध्यान से देखते जैसे उन्हें किसी विशेष व्यक्ति की तलाश हो।

एक दिन गंगू जो अपने बेटे के गम में उम्र से पहले ही बहुत बूढ़ा हो गया था, महात्मा के पास हाथ दिखाने आया। उसका हाथ देखकर महात्मा बोले--"बहुत भाग्यशाली हो। तुम्हें शीघ्र ही मनचाही वस्तु मिलने वाली है।"

महात्मा की बात सुनकर गंगू की आंखों में आंसू आ गए। वह बोला--"महाराज, मेरे ऐसे भाग्य कहां! जब बारह वर्ष तक वह चीज न मिली, तो अब क्या उम्मीद है!"

महात्मा ने गंगू की आंखों में आंसू देखे, तो पूछा--"क्या बात है? तुम रो क्यों रहे

हो, तुम्हें क्या दुख है?''

गंगू बोला--''आज से बारह वर्ष पहले मेरा बेटा बिछुड़ गया था। मैं उसे तलाश करते-करते थक गया हूं, लेकिन उसका कोई पता नहीं चला।''

गंगू की बात सुनकर महात्मा चौंक उठे। उन्होंने बड़े ध्यान से गंगू को देखा। वह महात्मा और कोई नहीं असल में गंगू का खोया हुआ बेटा सोनू ही था। अपने पिता के गले में बांहे डालकर बोला--''पिताजी, मैं ही आपका खोया बेटा सोनू हूं। मैंने आपको बहुत दुख दिए।''

अपने बिछुड़े हुए बेटे को पाकर गंगू की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। वह बोला--''बेटा, मैं तुमसे मिलने के लिए बारह वर्ष से तड़प रहा हूं। क्या इतने दिन में तुम्हें एक बार भी मेरी याद नहीं आई? तुम कहां चले गए थे?''

तपस्वी के वेश में सोनू बोला--''पिताजी, उस दिन मैं गांव के बाहर वाले मंदिर के पीछे एक खाई में जाकर छिप गया था। काफी देर तक जब मेरे साथी मुझे ढूंढने नहीं आए, तो मैंने सोचा, अब मुझे घर चलना चाहिए।

मैं अंधेरे में उस खाई से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था, तभी मेरा पैर किसी गड्ढे में जा पड़ा। वहां से लुढ़कता-लुढ़कता मैं बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया, तो मैंने अपने आपको एक विशाल गुफा में पाया।

उस गुफा के एक कोने में एक बहुत ही वृद्ध साधु ध्यान लगाए बैठे थे। मैं उनके समीप जाकर बैठ गया। जब साधु का ध्यान टूटा, तो मुझे देखकर प्रसन्नता से उनकी आंखें चमकने लगी।''

मैंने पूछा--''महाराज, मैं रास्ता भटक गया हूं। मुझे सोहनपुर गांव जाने का रास्ता बताइए।''

साधु बोले--'बेटा, यहां से बाहर जाने का रास्ता तो मुझे भी पता नहीं। तुम यहां ईश्वर की इच्छा से आए हो। अब यहीं रहकर मुझसे बारह वर्ष तक विद्या पढ़ो। इसी से मेरा उद्धार होगा।'

मैंने पूछा--''महाराज, मुझे विद्या पढ़ाने से आपका उद्धार कैसे होगा?''

साधु बोले--'बेटा, यह एक लंबी कहानी है। जब मैं तुम्हारी उम्र का था, मैंने अपने गुरु के आश्रम में बारह साल तक ज्योतिष तथा अन्य विद्याएं पढ़ीं। विद्याएं पढ़कर मैं प्रकांड विद्वान हो गया। मुझे अपने ज्ञान का घमंड था। मेरे पास कई बच्चे विद्या पढ़ने आए परंतु मैंने उन्हें विद्या नहीं पढ़ाई। मुझे लगा, मेरे समान कोई और विद्वान नहीं होना चाहिए। इस पर मेरे गुरुजी नाराज हो गए।

उन्होंने मुझे श्राप देते हुए कहा--'तुम जैसे स्वार्थी तथा घमंडी व्यक्ति के लिए इस पवित्र आश्रम में कोई स्थान नहीं। तुम किसी काल-कोठरी में जाकर रहोगे। तुम्हारी मुक्ति तभी होगी जब तुम किसी व्यक्ति को विद्याएं पढ़ाकर अपने समान विद्वान बनाओगे।' उन्होंने अपने योगबल से मुझे यहां पटक दिया। मैं तबसे आज तक यहीं हूं। सैकड़ों वर्ष बीत गए, परंतु यहां कोई नहीं आया जिसे मैं विद्या पढ़ाता। आज तुम आए हो।'

साधु की कहानी सुनकर मैं आश्चर्य में पड़ गया। बाहर निकलने का रास्ता था नहीं, इसीलिए विद्या पढ़ने के सिवा चारा भी क्या था! बारह वर्ष तक मैंने विद्याएं पढ़ीं। जिस दिन मेरी शिक्षा संपूर्ण हुई, साधु को मुक्ति मिल गई। साथ ही गुफा से बाहर निकलने का रास्ता भी खुल गया। इसके बाद वह साधु पता नहीं कहां चले गए!

मैं गुफा से निकलकर सीधा सोहनपुर आया लेकिन यह गांव मुझे नया-सा लगा। मैंने सोचा, मैं किसी और जगह आ गया हूं। आपको ढूंढने के लिए ही मैंने लोगों के हाथ देखने शुरू किए। मुझे उम्मीद थी आप भी मुझसे भाग्य पढ़वाने जरूर आएंगे। और वही हुआ भी। अब मुझे ज्योतिष विद्या से कुछ लेना-देना नहीं। मैं आपके पास रहकर आपकी सेवा करना चाहता हूं। इसके अलावा यदि आपका आर्शीवाद प्राप्त हो, तो मैं गांव में एक पाठशाला खोलना चाहता हूं ताकि मैं अपना सीखा ज्ञान दूसरों को बांट सकूं।"

बेटे की बात सुनकर गंगू बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोनू को गले लगाते हुए कहा--"बेटा, तुम पाठशाला अवश्य खोलो। इससे गांववालों का भला होगा।"

खजाने में कैद

राम नगरी का राजा था रामसिंह। वह बहुत ही वीर एवं प्रजापालक था। एक बार राजा शिकार खेलकर वापस आया, तो रानी को उसका स्वभाव काफी बदला-सा लगा। पहले वह महल में आता, तो हंसकर बातें करता। महल के कामों में रुचि लेता। मगर शिकार से आने के बाद बिल्कुल गुमसुम। नौकर उसे सोने के कमरे में ले गया। अब राजा वहां से बाहर ही न निकलता। किसी से अच्छी तरह बातचीत भी नहीं करता था। उसने सबको कमरे में आने की मनाही कर रखी थी। यहां तक कि वह रानी और राज्य के स्वामिभक्त मंत्री से भी बात नहीं करता था।

रानी रूपमती राजा के बदले हुए व्यवहार को समझ नहीं पा रही थी। इतना हंसमुख राजा एक दिन में कैसे बदल गया! कहीं राजा को कोई बीमारी तो नहीं हो गई? रानी चिंता में घुली जा रही थी। राजा की हालत पर उसे तरस भी आता और गुस्सा भी।

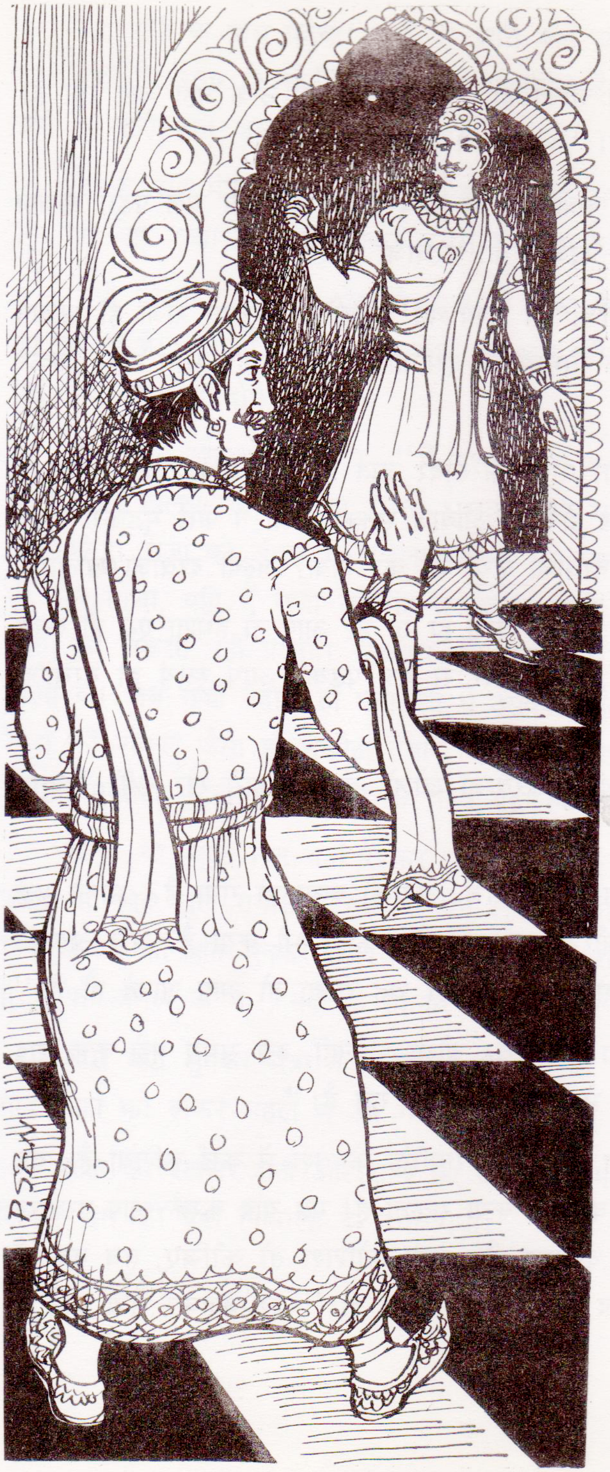
रानी ने अपने विश्वासपात्र बूढ़े मंत्री शेरसिंह से सलाह लेनी उचित समझी। शेरसिंह रानी एवं राजा का सच्चा हितैषी था। वह राजा के पिता के समय से ही मंत्री था। राजा को तो उसने गोद में खिलाया था। राजा भी अपने बूढ़े मंत्री को बहुत मानता था।

रानी ने मंत्री को अपनी शंका बताई। मंत्री भी कुछ इसी तरह सोच रहा था। उसने रानी से कहा--"राजा साहब मुझसे हर छोटे-बड़े मामले में सलाह लिया करते थे। अब न जाने क्या हो गया है! दूर से देखकर ही भगा देते हैं। इस बात की जांच-पड़ताल करनी चाहिए।"

मंत्री की बात सुनकर रानी और चिंतित हो गईं। उसने मंत्री से कहा--"आप अनुभवी हैं। कोई ऐसी तरकीब निकालिए, जिससे पता चले कहीं राजा के वेश में यह कोई दूसरा तो नहीं।"

मंत्री ने कुछ सोचकर कहा--"रानी जी, इसका पता एक ही बात से लगाया जा सकता है। राजमहल के गुप्त खजाने को खोलने व बंद करने का रहस्य मुझे या राजा जी को ही मालूम है। यदि वह व्यक्ति राजा रामसिंह ही है, तो उसे वह रहस्य पता होगा।"

मंत्री की इस बात से रानी सहमत थी। अगले दिन सुबह मंत्री शेरसिंह, राजा रामसिंह



के पास गया। राजा ने उसे टालने की बहुत कोशिश की, मगर मंत्री ने कहा--"मुझे बहुत जरूरी काम है।"

इसके बाद मंत्री कहने लगा--"महाराज, इस वर्ष राज्य में निर्माण कार्य अधिक होने की वजह से व्यय कुछ अधिक हो गया है। राजकोष में बहुत कम धन रह गया है। अब हमें अपने गुप्त खजाने से कुछ धन निकालना पड़ेगा।"

मंत्री की इस बात को सुनकर राजा चौकन्ना हो गया। संभलकर बोला--"क्या कहा, गुप्त खजाने से धन निकालना पड़ेगा। ठीक है, मैं भी यही सोच रहा था। तुम जल्दी से धन निकाल कर मेरे पास आओ। मैं सब देख लूंगा।"

राजा की इस बात पर मंत्री चकित रह गया। वह राजा का विश्वासपात्र था। फिर भी राजा गुप्त खजाने की चाबी अपने पास रखता था। राजा किसी दूसरे को वहां जाने की आज्ञा नहीं देता था। स्वयं ही खजाने का समय-समय पर निरीक्षण करता था। इस राजा की असंगत बात सुन उसका शक और भी बढ़ गया।

वह जानबूझकर बोला--"महाराज, आप चलते तो ठीक रहता। मुझे खजाने को बंद करने वाला मंत्र भी ठीक तरह से याद नहीं। कभी पहले खजाना बंद

भी नहीं किया।''

''अच्छा चलो, मैं चलता हूं। तुम जानते हो, मेरी तबीयत भी ठीक नहीं चल रही है। इसलिए खजाने के अंदर तुम ही जाना।'' –राजा ने कहा।

''बहुत अच्छा, महाराज'' –कहकर मंत्री राजा के साथ खजाने की ओर चल पड़ा। खजाने के द्वार पर पहुंचकर उसने मंत्र पढ़कर खजाने का दरवाजा खोला।

फिर वह राजा से बोला--''महाराज, इस राज्य की परंपरा के अनुसार राजा ही खजाने में जाता है। आपने यह परंपरा अब तक निभायी है, इसे तोड़िए मत। आप स्वयं अंदर जाकर धन ले आइए।''

राजा खजाने के भीतर चला गया। राजा के अंदर जाते ही मंत्री ने खटाक से खजाने का दरवाजा बंद कर दिया। दरवाजा बंद होने की आवाज सुनकर राजा ने पीछे मुड़कर देखा। वह घबराकर चिल्लाया--''मंत्री, तुमने दरवाजा क्यों बंद कर दिया? जल्दी दरवाजा खोलो।''

मंत्री बोला--''महाराज, आप इतने परेशान क्यों हो रहे हैं? आप तो हमेशा ऐसे ही करते हैं। दरवाजा बंद करके अंदर जाते हैं, फिर अंदर से मंत्र पढ़कर आप स्वयं ही दरवाजा खोलते हैं।''

राजा क्रोधित होकर बोला- ''जल्दी से दरवाजा खोलो, वरना तुम्हारी खैर नहीं। मैं तुम्हें सूली पर लटकवा दूंगा।''

मन ही मन मुस्कराता मंत्री बोला--''महाराज, आपको क्या हो गया है? आपने मुझे ऐसे अपशब्द आज तक नहीं बोले। और भला इसमें मेरा कसूर भी क्या है? यदि आपको मंत्र याद नहीं आ रहा, तो गुप्त मार्ग से निकल आइए। वह रास्ता तो आप जानते ही हैं।''

यह सुनकर राजा और भी झल्ला उठा। वह बोला--''नहीं, इस समय मुझे कुछ याद नहीं आ रहा। जल्दी दरवाजा खोलो। मेरा दम घुटा जा रहा है।''

अब मंत्री को पूरा यकीन हो गया, यह राजा रामसिंह के वेश में कोई छलिया है। वह बोला--''महाराज, आप ही बताइए, मैं कर भी क्या सकता हूं! मंत्र याद करके आप दरवाजा खोलने की कोशिश कीजिए या गुप्त दरवाजा है। आप कोशिश तो कीजिए, तब तक मैं महारानी जी से पूछकर आता हूं, शायद उनको कुछ मालूम हो।'' यह कहकर मंत्री वहां से चला गया।

वह रानी के पास पहुंचा। रानी को सारी बातें बतलाई। कहा--"यह निश्चित ही हमारा राजा नहीं है। मगर है कौन? जरूर कोई चालबाज है। राजा कहां हैं, इसे जरूर पता है। मैं इसी से सारी बातें जान लूंगा।"

इसके बाद मंत्री खजाने की ओर गया। राजा अंदर बेचैन था। मंत्री के आने की आहट सुन इस बार राजा ने गिड़गिड़ाकर उससे दरवाजा खोलने के लिए कहा।

मंत्री बोला--"तुम्हारा भेद तो खुल ही चुका है। केवल एक शर्त पर दरवाजा खोला जा सकता है। बताओ, हमारे राजा कहां हैं? तुम कौन हो? ठीक-ठीक उत्तर दो, वरना यहीं पड़े-पड़े दम तोड़ दोगे।"

राजा बने उस धूर्त ने कहा--"मैं मशहूर ठग कालू हूं। राजा रामसिंह एक दिन अकेले ही शिकार खेलने गए, तो वह रास्ता भूलकर मेरी गुफा के बाहर आ पहुंचे। उन्होंने मुझसे पानी मांगा। राजा को जंगल में अकेला देखकर मुझे एक योजना सूझी। मैं मुखौटे बनाना जानता हूं। मैंने सोचा, यदि मैं राजा रामसिंह की जगह राजा बन जाऊं, तो मुझे सारी जिंदगी काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। सोचकर मैंने राजा को पानी देते समय उसमें बेहोशी की दवा मिला दी। जब राजा बेहोश हो गया, तो मैं उसको अपनी गुफा में ले गया। फिर मैंने हू-ब-हू राजा की शक्ल जैसा ही मुखौटा तैयार किया। मेरा डीलडौल व रंग तो राजा जैसा है ही। नकली मुखौटा पहना, फिर राजा के वस्त्र पहनकर राजमहल चला आया।"

सोचा था, कुछ दिन यहां रहकर महल में रहने के कायदे सीख-समझ जाऊंगा। मगर जल्दी ही भेद खुल गया। मैं यहां से धन लेकर भागने की योजना बना रहा था। इसलिए गुप्त खजाने की बात सुनकर लालच में आ गया। मैं राजा को अपनी गुफा में बंद कर आया हूं। गुफा जंगल के पार, नदी के किनारे है।"

सारी बातें सुनकर मंत्री ने सिपाहियों को ठग के बताए स्थान पर भेजा। वे कुछ समय बाद राजा को लेकर महल में आ गए।

राजा को देखकर रानी और राज्य की जनता प्रसन्न हो उठी। राजा ने मंत्री को गले लगा लिया। ठग को देश निकाला दे दिया गया।

वीणा का जादू

एक थी मीना। मीना अपनी मां के साथ एक गांव में रहती थी। गांव में कोई रोजगार न होने के कारण उसके पिता घर से बाहर दूर शहर में रहते थे। मीना की मां को संगीत का बड़ा शौक था। उसके पास एक वीणा थी। मीना की मां वीणा बजाने में बहुत कुशल थी। उसकी कुशलता की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसने मीना को भी छोटी उम्र में ही वीणा बजाना सिखा दिया था।

एक बार गांव में महामारी फैली। मीना की मां भी उसकी चपेट में आ गई। वह गंभीर रूप से बीमार हो गई। जब उसे अपना अंतिम समय निकट जान पड़ा तो वह मीना से बोली– ''बेटी, अब मेरा अंतिम समय आ गया है। यदि तुझे कभी मेरी जरूरत पड़े तो वीणा पर अपने हाथों से तीन बार थपकी देना, मैं तेरी सहायता के लिए आ जाऊंगी।''

इसके बाद मीना की मां स्वर्ग सिधार गई।

अपनी पत्नी के मरते ही मीना के पिता को उसकी देखभाल की चिंता सताने लगी। आखिर कितने दिन उसके पास गांव में रह सकते थे, एक न एक दिन तो काम-धंधे के लिए शहर में जाना ही था।

इसी सोच में दिन गुजर रहे थे कि एक दिन उसके पास एक गरीब औरत अपनी बच्ची के साथ आई। उसने मीना के पिता से काम मांगा। उनको भी मीना की देखभाल के लिए किसी औरत की जरूरत थी। मीना के पिता ने उस औरत को मीना की देखभाल का काम सौंप दिया और शहर चले गए।

उधर मीना के पिता शहर गए, इधर मीना की जान पर बन आई। नौकरानी बन कर आई औरत घर की मालकिन बन गई। मीना से घर का सारा काम कराना शुरू कर दिया। उसके पिताजी जो पैसे भेजते थे, सब के सब अपने कब्जे में रखती। अधिकांश अपने ऊपर खर्च करके मीना को रूखी-सूखी खाने को देती और फटे-पुराने कपड़े पहनने को। ऊपर से उसे धमकी देती कि यदि अपने पिता को कुछ बताया तो वह उसे जान से मार देगी। बेचारी मीना क्या करती, सारा दिन आंसू बहाती रहती या कभी कामकाज से फुर्सत मिलती तो अपनी



मां की वीणा बजाती। अपनी मां की तरह वह भी वीणा बजाने में कुशल थी।

समय बीतने लगा। चुड़ैल नौकरानी के अत्याचारों में कोई कमी नहीं आई। अब तो उसकी बेटी भी मीना को डांटती-फटकारती रहती थी। मीना जब वीणा बजाती थी तो वह मन ही मन बहुत जलती थी। उसने बहुत कोशिश की मगर वह मीना से अच्छी वीणा बजानी न सीख सकी।

एक बार की बात है कि वहां के राजा ने घोषणा करवाई कि राजधानी में वीणा वादन की एक बहुत बड़ी प्रतियोगिता होने वाली है। अत: जो लोग इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहे वह निश्चित दिन, निश्चित समय पर राजधानी पहुंच जाएं।

जब मीना ने इस प्रतियोगिता के विषय में सुना तो उसने अपनी नौकरानी से प्रतियोगिता में भाग लेने की इच्छा प्रकट की। परंतु उसने साफ इंकार कर दिया क्योंकि मीना के उस प्रतियोगिता में भाग लेने का मतलब था -उसकी बेटी की हार। राजधानी जाने का समय भी आ गया। दोनों मां-बेटियां बड़े उत्साह से राजधानी जाने की तैयारी करने लगीं।

अब मीना धैर्य न रख सकी,

उसे अपनी मां की याद आई। अगर उसकी मां होती तो वह उसे जरूर राजधानी ले जाती। वह वीणा के पास बैठकर रोने लगी। तभी अचानक उसे अपनी मां की कही हुई बात याद आई कि यदि मेरी जरूरत पड़े तो वीणा पर तीन बार थपकी देना। उसने वीणा पर तीन बार थपकी दी। पलक झपकते ही उसकी मां उसके सामने थी। उसने मीना से पूछा- ''क्या बात है बेटी, इतनी उदास क्यों है?'' मीना ने शुरू से लेकर अंत तक सारी बात बात दी और अपनी राजधानी जाने की इच्छा भी।

सारी बात सुनकर मीना की मां ने कहा, ''बेटी, तू फिक्र मत कर। मैं तेरे राजधानी जाने की व्यवस्था कर दूंगी।''

''जिस दिन यह दोनों मां-बेटी राजधानी जाएंगी, मेरी वीणा भी साथ लेकर जाएंगी। उस दिन मैं तुम्हे छोटी-सी मक्खी बना दूंगी। तुम भी उस वीणा में बैठकर राजधानी पहुंच जाना और वहां पहुंचकर मौका देखकर वीणा में से निकल जाना। तुम फिर से लड़की बन जाओगी।'' यह कहकर मीना की मां गायब हो गई।

प्रतियोगिता के दिन मां के कहे अनुसार मीना राजमहल पहुंच गई तथा वीणा में से निकल कर पर्दे की ओट में छिपकर खड़ी हो गई।

प्रतियोगिता शुरू हो गई। सबने बारी-बारी से अपनी कला का प्रदर्शन किया। परंतु राजा के मन को कोई न जीत सका। निराश होकर राजा ने कहा- ''मुझे अफसोस है कि इतने बड़े राज्य में कोई भी वीणा बजाने में माहिर नहीं है। मैं किसी को भी विजयी घोषित नहीं कर सकता''।

यह बात सुनते ही मीना पर्दे की ओट से निकली और बोली- ''महाराज, मुझे एक बार मौका दीजिए।''

मीना तो इस बात से बेखबर थी कि उसके कपड़े मैले-कुचैले और फटेहाल थे पर वहां उपस्थित सभी लोग उसे देखकर हंसने लगे और मजाक उड़ाने लगे। परंतु राजा ने उनको डांटकर चुप करा दिया और मीना को वीणा वादन की अनुमति दे दी।

मीना ने बजाने के लिए अपनी मां की वीणा चुनी और बजानी शुरू कर दी। वह वीणा बजाने में तो निपुण थी ही। थोड़ी देर में ही उसकी वीणा का जादू वहां उपस्थित लोगों पर छाने लगा तथा सब उसी के रंग में डूब गए।

जब मीना ने वीणा बजाना बंद किया तो तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा। तब राजा ने कहा- ''हां, ऐसा ही वीणा-वादन तो मैं सुनना चाहता था। बेटी, तुमने तो मेरा

ही नहीं सबका मन जीत लिया है। परंतु तुमने यह कला कहां से सीखी और तुम्हारी यह फटेहाल हालत क्यों है? मीना ने सुबकते-सुबकते सारी कहानी राजा को सुना दी।

अपनी पोल खुलते ही नौकरानी और उसकी बेटी ने भागने की कोशिश की। परंतु राजा ने उन्हें पकड़वा कर जेल में बंद करवा दिया।

फिर राजा ने मीना से कहा- ''हम तुम्हारे पिताजी को तुम्हारे यहां होने की खबर भिजवा देते हैं। तब तक तुम हमारे साथ राजमहल में रह सकती हो। तुम्हारे पिताजी के बाहर रहने से ही तुम्हारी यह हालत हुई है। इसलिए हम तुम्हारे पिताजी को भी यहीं राजधानी में काम दे देंगे।''

मीना के पिता के राजधानी पहुंचते ही राजा ने उन्हें काम दे दिया तथा दोनों बाप-बेटी सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे।



लेखिका कुसुम अग्रवाल ने प्रस्तुत संग्रह में बाल पाठकों के लिए कुछ ऐसी कहानियों का संकलन किया है जो मनोरंजन के साथ-साथ हमारे नौनिहालों को नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए भी प्रेरित करती हैं। आशा है कि ये पुस्तक बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी रोचक लगेगी।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

ISBN : 81-230-1027-3
मूल्य : 40.00 रुपये

